केथोराइन

या

स्वाधीनता की देवी

लेखक

श्रीयुत रामप्रसाद।

प्रकाशक

उमादत्त शर्मा।

राष्ट्रीय-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,

१९२-१९४ हरीसन रोड, कलकत्ता।

रत्नाकर प्रेस में मुद्रित।

प्रथम संस्करण } संवत् १९७९ वि० { मूल्य ॥)
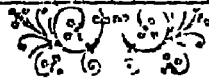
उत्सर्ग ।
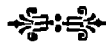
प्यारे अमरनाथ, जिस महान् आत्मा की जीवनी तुम हिन्दी में पढ़ना चाहते थे, वह तैयार है; किन्तु काल कराल ने मेरे नवीन जीवन की सारी आशाओं पर कुठाराघात कर तुम्हें उस के पढ़ने से वञ्चित रखा। परमात्मा करे तुम्हारी हार्दिक इच्छा पूर्ण हो, अतएव यह तुच्छ भेंट, तुम्हारे ही अर्पण है।

तुम्हारा—

राम।

निवेदन ।

श्रीयुत रामप्रसाद 'मैनपुरी-षड्यन्त्र-केस' के एक प्रधान-अभियुक्त समझे गये थे, यह पुस्तक उनकी ही लिखी हुई है।—बाहर के बहुत से महामना लोगों के चित्र और चरित्र हिन्दी में बहुत कम है। अनेक हिन्दी भाषाभिज्ञों को उनके कार्य-कलापों और बलिदानों का कुछ भी पता नहीं।

रूसके ज़ार के पतन से प्रायः अब लोग जान गये हैं कि जार के अमानुषिक अत्याचार कितने बढ़ गये थे, उसकी स्वेच्छाचारिताके सामने किसी की एक न चलती थी। ज़रासी देर में बढ़े से बड़े आदमी की इज़्ज़त खाक में मिलादी जाती थी। ज़ार की इस स्वेच्छाचारिता का विरोध होता था, परन्तु विरोध करनेवाले कड़ी सज़ायें पाते थे—और वह कड़ी सज़ा जन्मभर कालापानी या फांसी होती थी! सैकड़ों देशभक्त, इसी तरह बेमौत मारे गये। ज़ार के पापों का प्याला पापों से लबरेज़ हो उठा। रूस भरमें उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचे गये, गुप्त समितियां स्थापित हुईं। पहले लोगों की इच्छा थी कि ज़ार की जगह कोई दूसरा योग्य व्यक्ति गद्दी पर बैठे। परन्तु ज़ार की बढ़ी हुई स्वेच्छाचारिता ने अन्त में उस शासन-प्रणाली का ही समूल नाश कर डालने के लिये लोगोंको मज-

शुरू किया। विद्रोही लोग मार खाते २ अन्त में आगे बढ़े और एक दिन आया कि उनका अन्त हो गया! ज़ार से जरासी देर में ही त्यागपत्र लिखा लिया गया। शक्तिसम्पन्न ज़ार की स्पेशल ट्रेन, रास्ते में ही खड़ी हो गई! आगे कदम बढ़ाने की अब उसमें हिम्मत न रही! परिवर्त्तनशील संसारके नियमने अन्तमें ज़ारको राजवंश सहित मरवा डाला! सारे रूस पर विद्रोहियोंका कब्जा हो गया। मि० करेन्सकीके हाथमें रूसके शासन-सूत्रकी बागडोर आ गई। जारशाही गई, प्रजातन्त्र स्थापित हुआ। पर इस प्रजातन्त्र में भी धनियों और कोठीवालों की ही तूती बोलती थी। लोगोंने देखा था तो कुछ न हुआ। मि० करेन्सकी के विरुद्ध लोगोंमें दुर्भाव फैलने लगे। इतनी बड़ी राज्यक्रान्ति करके भी लोग उसी बुरी दुर्दशा में पड़े रहे। मि०-करेन्स्की का समय बीतने लगा। अन्तमें मि० करेन्स्की भी चले और महात्मा लेनिन ने रूस पर कब्जा लिया। सोवियट की जगह बोल्शेविक-शासन स्थापित हुआ। करेन्स्की इङ्गलैण्डमें बैठे आज भी सब बातें देख रहे हैं। रूसके बोल्शेविक भूतसे साम्राज्य-वादी और कोठीवाल राष्ट्र, कांप रहे हैं और वह बराबर आगे हाथ बढ़ाता जा रहा है।

सबसे पहले रूसमें क्रान्तिका बीज वपन करनेवाली केथोराइन थी। उसने कैसे कार्यारम्भ करके किस मर्दानगीके साथ सफलता प्राप्त की, यह पाठक पुस्तकमें पढ़ेंगे।

रूस को जारशाहीके पञ्जे से छुड़ानेवाली, रूसी-राज्यका-

न्तिकी दादी केथोराइन, रूसके एक वहुत वड़े उपाधिधारी, धनाढ्यकी लाड़ प्यारसे पाली हुई लड़की थी, वह वड़ी भारी धनराशि तथा वड़ी जमीन्दारीकी मालिक थी,उसके पास महल, अटारियां, वगोचे, दास दासियां सभी कुछ था, वह चाहती तो वड़े अमीराना ठाठसे अपनी जिन्दगी वसर करती। उसके पास रूप था, जिस पर हजारों नवयुवक लट्टू होकर उसके पांवों पर गिड़गड़ाते, परन्तु केथोराइन कोई साधरण स्त्री नहीं थी। उसने जव देखा कि धनो और मानी लोग अपनी इज़्ज़त वचानेके लिये जार और उसके कर्मचारियोंके कुकर्म्मों का ही समर्थन कर रहें हैं, देशके गरीव और किसान कठोरशासनके कारण भूखों मर रहे और कष्ट-यन्त्रणायें सहन कर रहे हैं! यदि कोई देशभक्त जरा शिर उठाता, तो साइवेरियाके वर्फीले कालेपानी में आजन्म कैद कर दिया जाता। अव तक कितने देशभक्त युवक देशभक्तिके अपराधमें फांसी पर लटकाये गये, कितने जारकी जेलोंके अन्धकारमय कैदखानोंमें वरसों पड़े सड़े। वैभवशालिनी केथोराइनका हृदय अव इन भयङ्कर काण्डोंको और अधिक न देख सका, उसके हृदयमें स्वाधीनताकी आग धधकने लगी। पहले उसने धन और वैभवसे पूर्ण अपना घर छोड़ा, मां, वाप,भाई, वहिन,पुत्र छोड़े और छोड़ा साथमें वीरता-पूर्वक काम न कर सकनेवाला अपना पति! उसका रूप उसके कार्य में वाधा न पहुंचा सके; इसलिये तेजाव डालकर उसने अपने मुख और अन्यान्य अङ्गों का सौन्दर्य नष्ट किया! देशके

गांव गांव में चक्कर लगाकर एक बहुत बड़ी क्रान्तिकी तैयारी करने का मन्त्र लोगों के कानों में फूंकना आरम्भ किया। इसके लिये उसे कितनी बार जेल और सावेइरिया की हवा खानी पड़ी, इसका कुछ ठिकाना नहीं। अन्त में वीरबाला केथोराइन की विजय हुई, जार का पतन हुआ और देखते हैं कि केथोराइनकी कृपा से रूस आज आज़ाद है। उसी स्वाधीनता की देवी केथोराइन का यह जीवनचरित है।

केथोराइन ने अनेक भयङ्कर कष्ट उठा कर अपने देशका उद्धार किया है—ऐसे और लोग बहुत कम मिलेंगे।—यह ठीक है कि भारत उस मार्ग का आज पथिक नहीं है। पर वह भी स्वाधीनता ही का इच्छुक है। किन्तु उसने दूसरा मार्ग ग्रहण किया है। उद्देश्य एक ही है, साधन भिन्न भिन्न। कौन जानता है कि राजनीति के कर्मक्षेत्रमें कितने परिवर्त्तन होते हैं, पर इससे किसी की देशभक्ति और त्याग पर अङ्गुली नहीं उठाई जा सकती। ऐसे महामना लोगों के चरित्रों और कार्यकलापों से हम आंखें भी नहीं मूंद सकते। साधनों में मतभेद हुआ करता है, सो हुआ करे, परन्तु केथोराइन की देशभक्ति और अपूर्व बलिदान, रूसके इतिहासमें स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा।—तपस्विनी वीरबाला केथोराइन के चरित्र से हिन्दी पाठक अनभिज्ञ न रह जांय, इसी लिये हम इसे हिन्दी में प्रकाशित कर रहे हैं।

कलकत्ता।
ता० २५।१।२३

उमादत्त शर्मा।

कैथाराइन

रूस को उद्धारकर्त्री कैथाराइन।

रत्नाकर प्रेस।

केथोराइन

या

स्वाधीनताकी देवी।

जन्म।

के थोराइन-ब्रशकोवस्की का जन्म १८४४ ई० में रूस के वाईटवस्क जिले की एक छोटीसी रियासत में हुआ था। केथोराइन के माता पिता उसे बहुत प्यार करते थे। सौभाग्यवश केथोराइन को ऐसी माता प्राप्त हुई थी, जो उसे जन्म से ही उत्तम शिक्षा देती रही। केथोराइन की माता अपने बच्चों का काम बिगड़ जाने पर उन्हें मारा न करती थी, किन्तु बैठ कर समझाया करती थी।

जब केथोराइन चार वर्षकी हुई तो उसके पिताने चिरनिगव-प्रान्त में एक बड़ी भारी जमींदारी खरीदी और वहीं पर उसने अपनी बाल्यावस्था व्यतीत की।

बाल्य-काल।

जब केथोराइन छोटी ही थी, तब उसका स्वभाव बड़ा कटु था। जब उसकी आयु तीन वर्ष की थी तो एक दिन उसे ऐसा

क्रोध आया कि उसने अपनी मां की आंख में लकड़ी मार दी। किन्तु शनैः शनैः माता की शिक्षा ने उसके कटु-स्वभाव को छुड़ा कर उसे विचारशील तथा गम्भीर बना दिया।

जब वह अन्य बालकों के साथ घूमने जाया करती, तो सबसे अलग होकर अकेली घूमा करती। उसे एकान्त-सेवन बहुत पसन्द था। खेतों तथा बागों में अकेली बैठकर पक्षियों के रहन-सहनका अवलोकन किया करती। कभी कभी किसानों के घरों में जाकर उनके बच्चों तथा स्त्रियों में बैठकर उनके जीवन का अध्ययन करती। इतनी छोटी अवस्था होने पर भी वह अपने कुटुम्बियों तथा किसानोंके रहन-सहन की तुलना कर बड़ी दुःखित हुआ करती थी।

कभी कभी किसानों के बच्चों का हाथ पकड़ कर अपने घर में ले जाती और अपने सब कमरों में घुमाकर अपनी मां के सामने ले जाकर कहा करती, "मां! देखो ये भी मनुष्य-सन्तान हैं, जिन्हें भर पेट खाने को नहीं मिलता और न शरीर ढांकने को कपड़ा मिलता है!" यह एक बड़ी अद्भुत तथा कौतूहल-जनक बात थी कि एक बड़े भारी जमींदार की कन्या मैले-कुचैले किसानों के बालकों का हाथ पकड़ कर अपनी माता के पास ले जाकर उनके दुःख की कहानी सुनाया करे, किन्तु यह था दैवी शक्तियों का विकास। बहुधा होनहार बालकों में ये बातें पाई जाती हैं। संसार में जितनी महान् आत्मायें हुई हैं उनमें प्रायः बाल्य-काल ही से दैवी-शक्तिका विकास हो उठा है।

केथोराइन की इन बातों को देखकर सब चकित हो जाते थे। कौन समझता था कि यही केथोराइन एक दिन रूस की शाही कहलायेगी, और सारा रूस उसके चरणों में सिर झुकायेगा !

केथोराइन ने अपनी जीवनी में लिखा है कि "हम लोग एक बड़े भारी महल में रहा करते थे। इस महल में कई बगीचे तथा वाटिकाएं थीं। हमारे यहां नित्यप्रति अतिथि आया करते थे और आनन्द मनाया करते थे। बड़े बड़े त्यौहारों पर अनेकों रईस तथा लेडियां एकत्रित हुआ करती थीं; जिनके आदर सत्कार में ही हजारों रुपया बरबाद कर दिया जाता था। रूसी सभ्य-समुदाय के अनुसार हमारे यहां भी अनेकों खेल, तमाशे, तथा थियेटर इत्यादि हुआ करते थे। केवल शान कायम रखने के लिये ही लाखों रुपया उड़ा दिया जाता था। ज़ार को सन्तुष्ट करने तथा रिझानेके लिये ही अनेक रमणियां नर्तकी बनाकर नचाईं जाती थीं !"

"यही नहीं मेरे चारों ओर बसनेवाले निर्धन किसान, सूर्योदय से पूर्व ही उठकर दिनभर खेतों, चरागाहों, बागों, जङ्गलों, अस्तबलों अर्थात् चारों ओर काम करते और बड़ी रात तक भी आराम न पाते, जब कोई जमींदार या उसका कोई सम्बन्धी पास आता, तो हाथ जोड़कर जमीन तक झुककर प्रणाम करते, किन्तु इस पर भी यदि जरासा काम बिगड़ जाता, तो गाली खाते तथा पीटे जाते और यदि कोई अधिक दोष होता तो

साइबेरिया को निर्वासित कर दिये जाते थे। उनकी स्त्रियां तथा बच्चे उनकी अनुमति लिये विना ही बड़े घरों की सेवा के लिये भेज दिये जाते थे! किसानों के छोटे २ बालक बड़े घरों के सेवकों की सेवा किया करते थे। यदि इनमें से कोई मालिकों के पास जाकर अपने बच्चों के भोजनकी प्रार्थना करता या कोई स्त्री अपने बच्चों के देने में आनाकानी करती, तो मार खाती और धक्का देकर बाहर निकाल दी जाती! ये दृश्य बहुधा मैंने अपनी आंखों से देखे हैं। मुझे भली भांति याद है कि मैंने कई बार अपने पिता के पैरोंपर गिरकर अपने नौकरोंको पिटने से बचाया है। बेचारे गरीब किसान नंगे सर तथा नंगे पैर जाड़े से ठिठुरते हुए दिन भर जमींदारों के द्वार पर बैठे रहा करते और अन्तमें न मिल सकने का उत्तर पा अपने घर लौट जाते। इन बेचारों के बड़े बड़े काम नष्ट हो जाते, किन्तु जमींदार लोग, लार्डों के साथ बैठे हुए ताश खेलने में दिन भर बिता देते!"

"इन सब अद्भुत व्यवहारोंको देखकर मुझे बड़ा दुःख होता। रात को जब मैं सोने जाती तो बिस्तर पर लेटकर घण्टों यही बातें विचारा करती थी।"

"किसानों के जीवन का अध्ययन करने के लिये मुझे बड़ा भारी समय मिला, क्योंकि सैकड़ों किसान मेरे पिता के पास अपनी दुःख-कहानी सुनाने आया करते थे। ऐसे समय में मैं सदैव अपने पिता के पास बैठकर उन दुःखियों की बातें सुना

करती। खेत, ऊसर, चरागाह, भूमिकर, आदि के सम्बन्धमें बातें हुआ करतीं थीं और कभी कभी फौजी भर्त्तीकी बात भी छिड़ जाया करती थी, क्योंकि उस समय के राज्य-नियमों के अनुसार रूसी फौज के लिये किसानों को ही अपने लड़के देने पड़ते थे। उस समय मैं कुछ भी न समझ सकती थी कि बेचारे किसानों पर इतना अत्याचार क्यों किया जाता था?"

"बहुधा मैं छिपकर निकट के ग्रामों में जाया करती और किसानों की झोंपड़ियों को देखा करती—कहीं वृद्ध घास पर पड़े हुए खाँस रहे हैं, पास ही कूड़ेका ढेर लगा हुआ है। बेचारे दिनभर अकेले पड़े पड़े भूखसे कहराया करते, क्योंकि और सब लोग खेतोंपर चले जाते थे। छोटे छोटे बच्चे कीचमें खेला करते और सुअरों तथा कुत्तों के जूठे बरतनों में पानी पिया करते थे! गिरजाघरों में जाकर ये सब किसान आंसू बहा बहा कर परमात्मा से प्रार्थना किया करते थे कि—हे भगवन्! इन कष्टों को दूर करो और दया करो कि ऐसा दुःखमय जीवन किसी को भी न मिले।"

"जब मैं आठ वर्ष की थी, उसी समय से मेरे मन में न्याय अन्याय का प्रश्न दृढ़ होने लगा था।"

अन्य बालकों की भांति कैथोराइन अपने आप को बड़ा न समझती थी और न कभी उत्तम उत्तम पदार्थों का भोग करने की इच्छा रखती थी। उसका यह स्वभाव था कि जो कुछ पाती, उसे गरीब बालकों को दे देती। जब कभी नये

खिलौने आते तो वह उन में से कुछ खिलौने ले जाती और किसानों के बच्चों को बांट दिया करती थी। बहुधा वह अपने कपड़े उतार कर गरीब बच्चों को दे आती। इसपर उसकी माता क्रोधित हो जाती, तब वह कहा करती थी,—"अम्मां! तुमने ही तो बाइबिल पढ़कर सुनाया है कि 'यदि किसी के पास दो कपड़े हों तो एक कपड़ा गरीब को दे दे!' तब तुम क्रोध क्यों करती हो। मैं ने तो तुम्हारी शिक्षा के अनुसार ही काम किया है!"

केथोराइन को खेल खिलौनों से अधिक प्रीति न थी। वह जीवित वस्तु जैसे बकरी का बच्चा या गाय का बछड़ा इत्यादि से बहुत प्रेम करती थी। इसके अतिरिक्त किसानों के बालकों से उसे बड़ी प्रीति थी। घर के बालकों का साथ छोड़ कर उन्हीं के साथ खेला करती थी।

यहूदियों की अवस्था देखकर बड़ा विचार किया करती और उनके साथ ईसाइयों का घृणित व्यवहार देखकर बड़ी दुःखित हुआ करती थी। उसके हृदय में दिनरात किसानों की भलाई का विचार चक्कर काटता रहता था। वह बैठकर विचार किया करती कि वह एक बड़ी भारी जमीन्दारी की मालिक है और जमीन्दारी में संसार के सभी किसान तथा अन्य दुखी नरनारी सुखसे जीवन व्यतीत कर रहे हैं। न तो कोई किसी का सेवक है न कोई किसी का दास। सब लोग अपना अपना काम अपने हाथों कर लिया करते हैं। न किसी

को भोजन की चिन्ता है न घरबार की। सब प्रकार की सुख सामिग्री उनके घरोंमें मौजूद है।

उसने कोलम्बसके अमेरिका दरियाफ्त करनेकी कहानी सुनी थी। अतएव वह विचारा करती थी कि केलोफोर्निया जाकर धन-धान्य प्राप्त करे और उसे सब किसानों को बांट दे। (अपने इस विचार को वह सबके सामने कहा करती थी और जब कोई उसका उपहास करता तो कह देती थी,—"उद्योगसे सब कुछ हो सकता है।")

कुमारावस्था।

नौ वर्ष की आयु के पूर्व ही केथोराइनकी माता ने उसे सारी बाइबिल समाप्त करादी थी। थोड़े समयके बाद ही केथोराइन की पहुंच एक बड़ी लायब्रेरी तक हो गई। वहां पहुंच कर उसने अनेकों भिन्न-भिन्न विषयों के ग्रन्थों का अवलोकन किया। भ्रमण-वृत्तान्त, इतिहास तथा विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें देखने से उसके विचारोंमें बड़ा भारी परिवर्त्तन हो गया। जितना अधिक अध्ययन करती, उतना ही किसानों के प्रति दया तथा न्याय का भाव बढ़ता जाता था।

उसने एक जगह पर लिखा है,—"मेरे पिता ने मेरे विचारों की उन्नतिमें बड़ी भारी सहायता दी थी, क्योंकि वे भी स्वतन्त्र-विचार वाले थे। बहुधा मैं अपने पिताके पास बैठ कर विज्ञान तथा भ्रमण विषयक पुस्तकें पढ़ा करती थी। सोलहवें वर्ष में ही मैंने वालटाइर, राउजो तथा डाईवर्ट की बहुतसी किताबों

का भलीभांति अध्ययन कर लिया था। फ्रांस की राज्यक्रान्ति का इतिहास मुझे बड़ा प्यारा लगता था। जब कभी मैं अपने घर की दास-दासियों की दशा को देखती; तो उन्हें स्वतन्त्र कर देनेकी मेरी इच्छा होती। पहले मेरा विचार था कि राज्यसत्ता में परिवर्त्तन हुए बिना ही दासोंको स्वतन्त्रता मिल सकती है। उस समय तक मेरे मन में किसी प्रकार के क्रान्तिकारी विचार न उत्पन्न हुए थे। दासों को स्वतन्त्र करने तथा जूरी द्वारा विचार होने के कानून बनने वाले थे, अतएव मुझे बड़ी भारी प्रसन्नता होती थी। इन नवीन उत्साहों की उमंग में आकर मैं अपने ग्राममें ही एक स्कूल खोल दिया था, जिसमें किसानों के बालकों को शिक्षा दी जाती थी।"

"बेचारे किसान इतने भोले-भाले थे, कि अपनी झोंपड़ी तथा खेतों के अतिरिक्त वे अधिक कुछ भी न जानते थे। उन्हें अपने अधिकारों का कुछ भी ज्ञान न था। उनका केवल यही एक कर्तव्य था, कि शान्ति के समय में कर देवें और युद्ध के समय में रङ्गरूट तैयार करें। इसके अतिरिक्त उन्हें और दुनियां की बातों से कोई सम्बन्ध न था।"

सन् १८६१ ई० में दास-दासियों को स्वतन्त्रता दे दी गई। इस कानून के पास हो जाने से लोगों की कुछ आशा बंधी; किन्तु किसानों की बड़ी बुरी दशा हो गई—इस कानून के पास होने से पहले सेवकों को अपने मालिकों की भूमि जोतने-बोने के बदले में अपने बाल बच्चों के पालनार्थ कुछ भूमि दी जाती थी।

जब ये लोग स्वतन्त्र किये गये, तो यह भूमि इन्हें न दी गयी।

"जब दास स्वतन्त्र किये गये, तो मालिकों ने उन्हें अपने घर से निकाल दिया। रद्दीसी जमीन का एक-एक टुकड़ा उन्हें दे दिया गया। जिस भूमि को वे लोग सदैव से जोतते बोते थे, उसके साथ वे अपना आत्मिक सम्बन्ध समझते थे। उनका विचार, था; कि उनकी आत्मा तथा भूमि दोनों ही स्वतन्त्र कर दिये जावेंगे ; किन्तु जब ऐसा न हुआ और उनसे बलपूर्वक उनकी पैत्रिक-भूमि छीन ली गई; तो उन सब लोगोंने इसका विरोध किया। वे सबके सब मिल कर अपने-अपने स्वामियोंके पास गये और दयाकी प्रार्थना की, किन्तु कोई परिणाम न निकला। (किसानों के आर्त्तनाद से सारा रूस गूँज उठा।")

"राज्य की ओर से प्रत्येक प्रान्त में एक-एक पंच नियत किया गया। जब पञ्चों से भी कुछ न हुआ तो फौजें भेजी गईं। फौजियों ने अत्याचार करना आरम्भ कर दिया। वे लोग वृद्धों को मारते थे और युवतियों पर अत्याचार करते थे, जिसके कारण किसान लोग और भी उत्तेजित हो गये। उस उत्तेजना को दबाने के लिये कोड़ों की मार शुरू की गई। मेरे ग्रामके निकट जिन किसानों ने भूमि छोड़ने से इनकार किया था, वे सब सड़क पर खड़े किये गये और प्रत्येक आदमी को कोड़े लगाये गये। जब इसका भी कुछ परिणाम न हुआ तो दूसरे

समाह उसी तरह से फिर कोड़े लगाये गये, इस पर भी जब उन लोगों ने भूमि छोड़नी स्वीकार न की, तो वे सबके सब बुरी तरह पीटे गये, जिसके कारण कई तो उसी स्थान पर मर गये।"

"इन सब बातोंको देख कर मैंने निश्चय किया—कि आर्थिक तथा नैतिक अवस्था में बड़ा भारी परिवर्त्तन होना चाहिये। उस समय तक मेरे विचारों में किसी प्रकारके क्रान्तिकारी भाव न उत्पन्न हुए थे।

१८ वर्ष की अवस्था में अपने विचारों को पक्का करने तथा विद्वानों के मत जानने के लिये मैं अपनी माता को साथ लेकर सेन्टपीटर्सवर्ग चली गई।"

पिट्रोग्राड पहुंच कर अनेकों विद्वानों से मिली, जिनमें से कोई डाक्टर, कोई वकील, कोई उपन्यास लेखक, कोई कवि, तथा कोई वैज्ञानिक थे।

स्त्रियों को उच्च शिक्षा देनेकी पूरी रोक थी; किन्तु इन लोगों ने स्त्रियोंके लिये कई स्कूल खोल रखे थे; फेथोराइन ने इन स्कूलों में शिक्षा ग्रहण की।

जब फेथोराइन की माता बीमार हुई तो उसने उसे अपने साथ ले जाना चाहा, किन्तु उसने जाना स्वीकार न किया।

(अब केथोराइन के विचारों में बड़ा भारी परिवर्त्तन हो गया था—उसने दृढ़ निश्चय कर लिया था, कि प्रत्येक मनुष्य स्वतन्त्र

है, अतएव सब को अपने हाथ से ही कमा कर खाना चाहिये।

प्रिन्स क्रापटकिनने अपनी 'Memories of a Revolutionist' नामी पुस्तक में लिखा है,—"गुलामों के हाथ की बनी हुई रोटी कड़वी मालूम होती है। अतएव नवीन सन्तान उसे खाना स्वीकार नहीं करती!"

करकोजफ तथा उसके मित्रों पर लगाये हुए अभियोग के पक्षमें कहा गया था, कि ये लोग सबके सब बड़ी-बड़ी जायदादों के मालिक होने पर भी तीन या चार आदमी मिल कर एक ही कमरे में रहा करते हैं और प्रत्येक मनुष्य का खर्चा प्रतिमास पांच डालर से अधिक नहीं होता तथा इन लोगों ने अपनी सारी जायदाद तथा धनसे कोपरेटिव बैंक्स और कोपरेटिववर्कस खोल रखे हैं। १८६० ई० से १८६५ ई० तक धनाढ्यवंशोंके पिता-पुत्रों में एक बड़ा भारी झगड़ा चल रहा है, क्योंकि पिता तो पुराने ढंग से रईसों के ठाठ-बाट से जीवन व्यतीत करना चाहते हैं और अपनी सन्तानों को भी यही शिक्षा देने का प्रयत्न करते हैं; किन्तु नवीन सन्तान ऐसा करना पाप समझती है। नवयुवक फौजकी नौकरियां, दुकानें तथा जमींदारी छोड़-छोड़ कर राष्ट्रीय विद्यालयों में भर्ती हो गये हैं और युवतियां भी सुख-सामग्री को त्याग कर सेण्टपीटर्सबर्ग, मास्को, तथा केप इत्यादि बड़े-बड़े शहरों में शिल्पकला सीखने के लिये जमा हो गई हैं। इस संग्राम में बहुतसे बालकों ने अपने माता

पिता पर विजय पा ली है और स्वतन्त्र जीवन बीता रहे हैं।"

केथोराइन की माता ने उसे सभ्य घरों के बच्चों की संरक्षकता का कार्य सीखने के लिये बाध्य किया, जिसे वह ढाई वर्ष तक सीखती रही। इसी समय में उसने अनेकों गृह-कार्य भी सीख लिये।

अन्त में उसके पिता ने उसकी स्वतन्त्रता में बाधा न डालने की प्रतिज्ञा कर उसे घर बुला लिया और लड़कियों को शिक्षा देने के लिये एक पाठशाला तथा बोर्डिंग हाउस खुलवा दिया। बहुतसे कुटुम्बियों की सहायता से सभ्य घरों की कन्याएँ भी वहाँ रह कर शिक्षा पाने लगीं। उसके पिता ने एक ऐसा घर भी बनवा दिया था, जहां पर केथोराइन गरीब किसानों के बच्चों को शिक्षा दिया करती थी। अमीरों की कन्याओं से जो कुछ फीस प्राप्त होती थी, वह उसे किसानोंके बच्चोंमें बांट देती थी।

युवावस्था।

इसी प्रकार कार्य करते हुए जब केथोराइन पच्चीस वर्ष की हुई, तो उसने अपने ऐसे स्वतन्त्र विचारवाले एक युवा पुरुषसे विवाह कर लिया। यह युवक भी कृषकों से बड़ी सहानुभूति रखता था। अतएव केथोराइन की सहायता करनेमें उसे बड़ा आनन्द प्राप्त होता था।

पति तथा पत्नी ने मिल कर एक कोपरेटिव-बैंक तथा एक किसान-पाठशाला खोली। इन दोनोंके कार्यों को देखकर

कई जमींदारों के लड़के भी इनके सहायक बन गये। अब केथोराइन के विचारों में और भी परिवर्तन होने लगा।

कुछ दिनों के बाद केथोराइन की बहन विधवा हो गई, अतएव उसे वहां जाना पड़ा। वहीं पर उसे अपने एक परिचित व्यक्ति का पत्र मिला। पत्र में लिखा था,—"रूस की स्थिति बहुत ही खराब है। यहां पर काम करना कठिन है। अतएव मैं अपने कुछ मित्रों को लेकर अमेरिका जा रही हूं। अमेरिका में पहुंच कर हम सब लोग एक बस्ती बसायेंगे और सबके सब अपने ही हाथों से सब काम किया करेंगे। यदि तुम भी हम लोगों के साथ चलना चाहो, तो शीघ्र आ जाओ।"

केथोराइन ने उत्तर दिया,—"ऐसे समय में जबकि अपने देश में ही इतना विस्तृत कार्यक्षेत्र है, तो दूसरे देश में जाना महान् पाप है। आप स्वयं विचार सकते हैं, कि यहां पर जो काम होना है अभी उसका आरम्भ भी नहीं हुआ है। अमेरिका पहुंचने पर हमें अपना सहायक मिलना कठिन है, किन्तु यहां पर सारा देश हमारे साथ है। इसलिये मैं अपना देश न त्याग सकूंगी और तुम्हें भी यही अनुमति दूँगी, कि अपने देश में ही रहो और दुखियों की सहायता करो।"

उसी समय से केथोराइन ने अपने कार्य के लिये स्वयंसेवक ढूँढने शुरू कर दिये। उसने कीव में ही अपना कार्य आरम्भ कर दिया। यद्यपि वह शहर में किसी को भी न जानती थी, तथापि उसने यह दृढ़ निश्चय कर लिया था, कि चाहे जो हो वह

उच्च-विचार के युवकों का संगठन कर कार्य आरम्भ करेगी।

उस शहर के युवकों ने मिल कर एक भोजनालय खोला था, इस भोजनालय में बाहर के लोग भी दाम देकर भोजन पा सकते थे। फेथोराइन ने इसी भोजनागार में भोजन पाना उचित समझा। वहां पहुंचने पर फेथोराइन को मालूम हुआ, कि विद्यार्थी गण भोजन करते समय अनेक विषयों पर वादविवाद किया करते हैं, अतएव उसने भी अपना नाम पता लिख कर विद्यार्थियों को दे दिया और इन्हें अपने मकान पर बुलाया।

उसी शाम को पांच विद्यार्थी उसके पास आये। उनसे बातचीत करने पर मालूम हुआ, कि वे लोग केवल किताबी कीड़े ही न थे, किन्तु इन्हें कुछ बाह्यज्ञान भी था। उसने इन लोगों से कहा,—"तुम लोग अपने देश के लिये कुछ वलिदान करो। जब कि आधे से जियादा लोग भोजन न मिलने के कारण प्राण त्याग रहे हैं, तो क्या इन लोगों के प्रति तुम्हारा कुछ कर्त्तव्य नहीं है? क्या वे लोग तुम्हारे भाई नहीं हैं? तब तुम लोग अपनी आंखों पर पर्दा डाले हुए कोरी बहसों में अपना समय क्यों नष्ट करते हो?"

सबने मिल कर कहा,—"हम कर्त्तव्यहीन हैं, किन्तु करें तो क्या करें? जब बड़े-बड़े लोग कुछ नहीं करते तो हम क्या कर सकते हैं?"

इन विद्यार्थियों में से कुछ क्रान्तिकारियों को भी जानते थे, किन्तु ये लोग अब तक अपना कर्तव्य निश्चय न कर सके थे।

थोड़े दिनों के बाद ये लोग क्रान्तिकारियों से अपना सम्बन्ध घनिष्ट करने लगे और केथोराइन से भी उनका परिचय करा दिया। इसके थोड़े दिनों बाद ही केथोराइन को घर जाना पड़ा। घर पहुंच कर उसने अपने पति तथा मित्रों के साथ राजनीतिक आन्दोलन द्वारा किसानोंकी सहायता करना निश्चय किया।

केथोराइन ने लिखा है,—"सच्चा देशभक्त वही है जो राज-शक्तिकी कुछ भी परवा न करे और अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठावे। हम लोगोंने सरकारी कानून तथा प्रतिबन्धों का अध्ययन किया, जिन में कईएक किसानों के पक्षपाती थे, किन्तु किसानों में कोई भी इनको न जानता था, इन लोगोंने ऐसे सब कानून किसानों को बतलाये।"

जब कभी केथोराइन किसानों को उपदेश किया करती थी, तो उसका बड़ा प्रभाव पड़ता था, क्योंकि वह उन सबके साथ बड़ी उदारता और शुद्ध हृदय से मिलती थी।

केथोराइन की पवित्रता को देख, कई जजों के विचार बदल गये, अतएव उन लोगों ने किसानों का पक्ष ग्रहण किया। जब रईस तथा जमीन्दारों ने यह दशा देखी, तब उन लोगों को उक्त पदों से पृथक् कर दिया। केथोराइन तथा उसके पति पर पुलिस की निगरानी होने लगी और उसके भाषणोंकी बड़ी कड़ी

जांच की जाती थी। (इन सारी बातों को देखकर केथोराइन ने निश्चय किया, कि राज्य-प्रणालीमें परिवर्तन हुए बिना कोई काम सफल न होगा, क्योंकि जहां कोई किसानों की भलाई करना चाहता था, अधिकारी लोग उसे दबा देते थे।

उस समय सरकार के विरुद्ध एक भी शब्द कहना मानों जेल-निर्वासन तथा मृत्यु का आवाहन करना था। उस समय केथोराइन की आयु छब्बीस वर्ष की थी। उसने अपने पति से साफ साफ शब्दों में पूंछा, कि क्या वह भी इन अत्याचारों का सामना करने में सहायक होगा, या नहीं?

(जब उसके पतिने उसका साथ देनेसे इन्कारकिया तो वह पति से अलग हो गई और अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ हो कार्य करने लगी।

उस समय जो लोग किसानों की सेवा कर रहे थे, उन सबको उसने अपने परिचय-सूचक पत्र लिखे। जिन जिन को उसने पत्र दिये थे, उनमें यह भी लिखा था, कि सबको यत्न करना चाहिये, कि जिस से किसानों को उन की जमीनें मिल जावें, किन्तु किसीने भी उस की बात पर ध्यान न दिया। उसी समय उसे पता लगा, कि गवर्नमेण्ट किसानों की उन्नति नहीं चाहती और जहां तक हो सके उन्हें अपने हाथ में रखना चाहती है। अतएव वह अपने घर लौट गई।

उस समय क्रान्ति की आग सुलगने लगी थी—एक युवक 'नेफेच' ने क्रान्तिकारियोंका एक दल बनाया, किन्तु उसका पता चल गया और सब लोग कैद कर लिये गये। यह सन् १८७१

६० का रूस में सब से पहला समय था, जब कि स्वतन्त्रता की लड़ाई का आरम्भ हुआ। ग्रेट साइबेरियन रोड पर क्रान्तिकारी निर्वासितों का स्वागत बड़ी धूमधाम से किया गया। उसी समय उन लोगों के क्रान्तिकारी विचार, छपवा कर रूस भर में बांटे गये।

फेयोराइन भी कीव पहुंची और एक क्रान्तिकारी दल में सम्मिलित हो गई।

उस समय रूसमें दो प्रकार के क्रान्तिकारी थे—एक पीटर-लेवर्व के अनुयायी, दूसरे माइकल बकुनिन के अनुयायी। पहलों का सिद्धान्त था, कि किसानों को धीरे-धीरे शिक्षा दी जावे और जब वे लोग अपना कर्त्तव्य समझ लेवें तब उन्हें क्रान्ति के लिये उत्तेजित किया जावे। दूसरों का विचार था, कि किसानों को संगठित कर जहां तक सम्भव हो सके शीघ्र ही क्रान्ति करा दी जावे, क्योंकि अत्याचारों से पीड़ित हुए लोग गदर करने पर तुले हुये हैं और कहा भी जाता है,—

"It hunger is the most efficient teacher."

क्षुधा एक बड़ा अच्छा शिक्षक है, उन्हें बतादो, कि वे क्यों भूखे हैं और किस प्रकार उनका पेट भरा जा सकता है। वे तुरत ही उद्यत हो जावेंगे।

लेवरेव तथा बकूनिन उस समय स्वीटजरलैण्ड में रहते थे। इन दोनों में बड़ी मित्रता थी। उनके बहुतसे अनुयायी भी एक दूसरेसे प्रेम रखते थे। क्योंकि दोनोंका उद्देश्य एक ही था, केवल

ढंग में भेद था। दोनों दलवालों का पूर्ण विश्वास था, कि रईस लोग शताब्दियों से गरीब किसानों का खून चूस-चूस कर आनन्द उड़ाते हैं,दिन दहाड़े उनका माल लूट कर अपनी इच्छायें पूरी करते हैं। अतएव जहां तक सम्भव हो पापियों को पाप-कर्म का फल दे गरीबों की रक्षा करनी चाहिये।

केथोराइन भी बकूनिन दल की अनुयायी हो गई। थोड़े ही दिनों में उसने कीव में युवक तथा युवतियों का एक दल एकत्रित कर लिया। इन लोगों में एक विशेष मेरीकलियरकिन थी, जो थोड़े ही दिनोंमें एक बड़ी भारी क्रान्तिकारिणीबन गई।

थोड़े दिनों बाद कीव में क्रान्तिकी आग भभक उठी। सारा शहर देश पर निछावर होने वाले युवकों से भर गया। उस समय बहुतसे नवयुवक लेवरेव तथा बकूनिन से मिलने के लिये स्वीट-जरलैण्ड पहुंचते और वहां से पक्के विचारके आदमी बन कर वापस आते और प्रचार करते।

रूसी गवर्नमेण्ट ने भयभीत होकर आज्ञा निकाली कि जहां तक सम्भव हो सके निश्चित समयतक सब रूसी विद्यार्थी, स्वी-टजरलैण्ट से रूस लौट आयें अन्यथा समय बीत जाने पर उन्हें स्वदेश लौटने की आज्ञा न मिल सकेगी। रूसी विद्यार्थियों ने इस आज्ञा की जरा भी परवा न की और जब तक इच्छा हुई, वहां रहे और आस्ट्रिया होकर वापस लौट आये। जो विद्यार्थी स्वीटजरलैण्ड से वापस आता था, वह पहले कीव में ठहरता था।

इधर "जनता की सहायता" की आवाज ऐसी गूँज उठी, कि हजारों बड़े आदमियों तथा रईसों की सन्तानों ने निश्चय किया, कि जनता की सहायता जभी हो सकती है, जबकि उनके साथ रह कर कार्य किया जावे।

प्रिन्स क्रापटकिन ने लिखा है,—"उस समय वह जागृति फैली, कि नवयुवक, डाक्टर, सहायकडाक्टर, अध्यापक—मजदूर, कारीगर, बढ़ई तथा लुहार इत्यादि का काम सीख सीख और ग्रामों में बस कर किसानों की सेवा करते हुए प्रचार करते थे। हजारों बालिकायें, अध्यापिका, दाई तथा अन्य कला कौशल सीख सीख कर किसानों में रह कर उनकी सहायता करती थीं।"

"ये लोग किसी विशेष सामाजिक अथवा राजनीतिक विचार को लेकर ग्रामों में नहीं जाते थे। [इन लोगों का केवल यही विचार था, कि गरीबों को शिक्षा देकर उनकी दशा सुधारी जावे और उनके जीवन का अध्ययन किया जावे।]

यह कार्य नितान्त नियमपूर्वक तथा खुल्लमखुल्ला किया जाता था, किन्तु रूस गवर्नमेण्ट ने इसका भी विरोध किया और इन लोगों को बुरी तरह से दबाना शुरू कर दिया। जिसके कारण उनमें से अधिकतर क्रान्तिकारी बन गये। केथोराइन तथा उसके मित्रों का भी यही हाल हुआ।

उस अवस्था में बहुत से नरनारी किसानों का भेष धारण कर उनके साथ रहते और अपने हाथों से काम करते थे या उन लोगों को क्रान्ति के लिये तैयार करते थे। उन सब लोगोंमें

विचार था, कि किसानोंके साथमें रहें। विना उनके उस जीवनका अध्ययन नहीं हो सकता, क्योंकि "जाके पांव नहिं परी विवाई, वो क्या जाने पीर पराई।" किसान सब क्रान्ति के पक्ष में थे और रइसों के अत्याचारों से छूटना चाहते थे, किन्तु विना संगठनके कुछ नहीं कर सकते थे।

देश के कार्यों में खुलमखुला सम्मिलित होने के पूर्व केथोराइन ने अपने कुटुम्बियों से अन्तिम विदा ले लेनी ही उचित समझी, क्योंकि राज्यनियमों का उल्लङ्घन करना सदैव के लिये घर त्यागना, देश त्यागना या मृत्यु के मुंह में पैर रखना-सब एक ही श्रेणी के हैं।

सबसे पहले वह अपनी वहनसे मिलने गई, फिर अपने माता पिता तथा पति से मिली। यह एक दुःखपूर्ण तथा स्मरणीय मिलन था।

जब केथोराइन का स्कूल रूस गवर्नमेण्ट ने तोड़ दिया था, तब केथोराइनने अपने पतिसे साफ साफ शब्दोंमें कह दिया था-कि शरीर में प्राण रहते तक गवर्नमेण्ट के अत्याचारों का विरोध करेगी।—अतएव वह समय आ गया था, कि केथोराइन कार्यक्षेत्र में अवतरण कर देश को सेवा करे। वह अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रही, तब उसके पति ने बड़े नम्र शब्दों में विनय की कि अब यही उचित है कि वह अपने घर को लौट चले! केथोराइन का पति था तो सद्‌विचार वाला, किन्तु उसमें दृढ़ता की कमी थी और आत्मविश्वास भी न था। अतएव कष्टों

का सामना करना उसकी शक्ति के बाहर था। उसने कैथो-राइन का साथ देने से साफ इन्कार कर दिया।

कैथोराइन के कुटुम्बियोंने उसे बड़ा ऊँचा नीचा समझाया। सांसारिक सुखों तथा पैतृक-मानापमानका वर्णन किया। धर्म-शास्त्र तथा सब तरह से उसे बाधित करना चाहा और उसकी अवस्था को सामने रखते हुए कहा, कि थोड़े ही दिनों बाद वह पुत्रवती होगी, किन्तु कैथोराइन के हृदय में वह आग लगी हुई थी, जिसे बुझा देना इन साधारण घटनाओं का काम न था।

बड़ी ही विचित्र अवस्था है—एक ओर पति का पूर्ण प्रेम, धन जन सखा सहोदर तथा कुटुम्बियों सहित आनन्दमय जीवन है और दूसरी ओर जेल तथा देशनिकाला! संसार में बड़ी से बड़ी आत्मायें साधारण कष्टका सामना करने से भय-भीत हो पापमार्गका अवलम्बन करने पर उद्यत हो जीते हैं और कर्त्तव्य को भुला देती हैं। किन्तु संसारसे अशान्ति दूर करने वाली आत्माओंका त्याग कुछ अद्भुत होता है। वह त्याग सबमें नहीं पाया जाता।

कैथोराइनने सुख समृद्धि पर ठोकर मारना ही निश्चय किया, अतएव उसने अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे सब कुटुम्बियोंकी ओर देख एक लम्बी सांस ले अन्तिम विदा ग्रहण की और जन्म भर उन लोगोंसे और न मिली!

इसके बाद कैथोराइनके साइबेरिया भेजे जानेके थोड़े दिनों

बाद ही उसके पतिका देहान्त हो गया और साइबेरियासे लौटने के पूर्व ही उसके माता पिता भी शरीर त्याग गये।

घर छोड़नेके बाद कैथोराइन अपनी विधवा बहन आल्गा तथा माशाके साथ कीवमें रहने लगी। इन तीनोंने मिलकर एक राष्ट्रीयदल कायम किया, जो कि "कम्यून" नामसे प्रसिद्ध हुआ। यही दल कीव के देशभक्तों का केन्द्र बना और इसी दलने रूसकी जाग्रति पर बड़ा भारी प्रभाव डाला। इस दलके सब लोग अपने हाथोंसे ही अपने खाने लायक पैदा कर लेते थे।

कैथोराइन छोटे छोटे कागजके टुकड़ोंपर अपना नाम तथा पता लिख देती और इन्हीं कागजोंपर यह भी लिख देती कि वह अमुक अमुक विषयोंकी शिक्षा दे सकती है। इन सब कागजोंको लेकर सड़कके चौराहों पर खड़ी हो जाती और स्कूलकी लड़कियों तथा युवतियोंको ये कागज बांट दिया करती थी। उसके सहयोगी इस कार्य की हंसी उड़ाते थे, किन्तु थोड़े दिनोंमें ही उसका परिश्रम सफल हुआ—इतनी युवतियां काम सीखने को आने लगीं कि कैथोराइन इन सब को शिक्षा न दे सकती थी। कैथोराइनको १४० रूबल प्रति मास की आमदनी होने लगी। उस समय इतना काम आ गया था कि सूर्योदय होने के पूर्व से आधी रात तक उसे काम करना पड़ता था। रातके समय वह इतनी थक जाती कि लेटते ही सो जाती थी, किन्तु उसे यह जीवन बड़ा सुखमय तथा शान्तिमय प्रतीत होता था।

धीरे धीरे "कम्यून" ने बड़ी भारी तरक्की पाई। बाहरसे देखनेमें तो वह एक ग्रामीण-घर मालूम होता था, किन्तु अन्दर बड़े बड़े कमरे थे, जिनमें किसीमें बढ़ई के सारे औजार रहते थे, किसीमें जूता बनानेकी शिक्षा दी जाती तो किसीमें कपड़े सीनेका काम सिखाया जाता था।

इसी प्रकारके कलाकौशलों के अतिरिक्त वहां पर तरह तरह की चीजें छापनेकी मुहरें भी बनाई जाती थीं। इस विद्यालयमें एक आम बैठक का कमरा भी था, जिसमें गुप्त तार पत्रादि आया करते थे और अनेकों युवक तथा युवतियां बैठकर भिन्न भिन्न विषयों पर वादाविवाद किया करते थे। विद्यालयके सब लोग किसानोंकी तरह अपना जीवन व्यतीत करते हुए बड़े बड़े उच्च विषयोंकी आलोचना किया करते थे।

उस समय किसानोंके प्रति वह भक्ति उत्पन्न हो गई थी कि सब शिक्षित जनता उनका देवताओं की तरह सम्मान करने लगी। बड़े बड़े अमीरोंके लड़के अपना घर बार छोड़ "कम्यून" में निवास कर अपने हाथों काम करना सीखने लगे।

पीट्रोग्राड तथा कीवमें केथोराइन को सब लोग जान गये। जब कभी युवक समुदाय एकत्रित हो जाता, तब केथोराइनका नाम ही सबकी जबान पर होता।

जब केथोराइन पीट्रोग्राडमें थी तो उसके गर्भसे एक बालक उत्पन्न हुआ। थोड़े दिनों बाद ही वह अपनी भावज वेराके पास कीव गयी। कीव पहुंचने पर निश्चय हुआ कि वेरा तथा

उसका पति केथेराइनके पुत्रको अपना पुत्र समझ, पालन पोषण करें। उसी समय केथोराइन की बहन मलूगा का देहान्त हो गया, जिससे उसे बड़ा दुःख हुआ।

थोड़े दिनों बाद ही वेराका पति उसे लेने आया। केथो-राइन अपने बच्चेको छोड़नेसे बड़ी दुखित हुई। एक अद्भुत दृश्य था—गाड़ी सजी हुई द्वार पर खड़ी है, गाड़ीके घोड़े चलने के लिये विचलित हो रहे हैं। वेरा तथा उसका पति गाड़ीमें बैठ चुके हैं। केथोराइन बच्चे को गोदमें लिये हुए बाहर आई और बच्चेको वेराकी गोदमें दे दिया। दो चार मिनट तक शान्ति रही, किन्तु अन्त में केथोराइन के आंसू निकल पड़े, और वह बच्चोंकी तरह फूट फूट कर रोने लगी!

वेराने पूछा, "क्यों? रोती क्यों हो?" किन्तु वह रोती ही रही। वेराने केथोराइन का माथा चूमा और गाड़ी चल दी। केथेराइन पागलोंकी भांति खड़ी हुई गाड़ीके पहियोंकी ओर ताकने लगी। थोड़ी ही देरमें गाड़ी दूर पहुंची और आंखों से ओझल हो गई—केथोराइन पर वज्र गिरा। एक जगह उसने लिखा है—

"मुझे विदित हुआ कि मेरे हृदयके हजारों टुकड़े हो गये हैं। पैर टूट गये और हाथ जकड़ गये हैं। उस समय मैं उस स्थान से हिल भी न सकी। उस समय मुझे अपने सम्ब-न्धियोंकी वह बात जो उन्होंने घरसे विदा होते समय कही थी, याद आ गयी।—'ठहरो! जब तुम्हारा विवाह हो जावेगा,

तव तुम वन्धनमें आओगी ।'—समय आया कि मेरा विवाह हुआ। मुझे भली भांति स्मरण है कि मैं यथावत् अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रही और पहलेसे अधिक गरीबोंका विचार करने लगी। तब मेरे मित्रोंने कहा था—'जरा और ठहरो, तुम्हारी भी जायदाद होगी, जिसकी तुम्हें देख-रेख करनी पड़ेगी। तुम्हारा सारा समय चला जावेगा।'—मेरे पति तथा मैंने एक जायदाद खरीदी, किन्तु कोई भी वात ऐसी न उत्पन्न हुई जो मेरे विचारों को वदल देती। थोड़े दिनों वाद सब लोग कहने लगे,—'हाँ! पति तथा जायदादमें तो नहीं फँसी, किन्तु परमात्माके नियम को कैसे तोड़ोगी? वच्चा पैदा होते ही तुम्हारे ये विचार मिट्टीमें मिल जावेंगे।' वच्चा पैदा हुआ। मैं ने विचारा था कि वच्चे के साथ ही साथ मेरी युवावस्था समाप्त हो जावेगी और जैसे ही वह मेरे शरीरसे अलग होगा, मेरा उत्साह भी उसीके साथ चला जावेगा, किन्तु ऐसा न हुआ। पुत्र को गोद में लेकर पुत्र-प्रेमका स्वाद चख, जीवनका आनन्द भोगूं या स्वदेशप्रेम में मग्न हो देशको स्वतंत्र कर हजारों दुखी वच्चों का पालन कर उनकी माता वनूं? इन्हीं वातोंपर विचार करते करते मुझे कई रात नींद न आई। मैं भलीभांति जानती थी कि मैं एक पुत्र की माता नहीं हो सकती, हां देशभक्त वन असंख्यों अनाथ तथा दुखी पुत्रोंकी माता अवश्य वन सकती हूं। दोनों काम ऐसे थे, कि जिनका साथ साथ निवाह ले जाना असम्भव था, क्योंकि पुत्र पर प्रेम करके उसका पालन पोषण करना पड़ता, तो देश-

सेवा होनी नितान्त असम्भव थी। अतएव मैंने अपने भाई तथा भावज को बच्चा दे दिया, जिससे वे उसकी रक्षा करें और मैं अपने व्रत की रक्षा करूँ। केवल मैं ही एक ऐसी माता न थी, जिसने बच्चे के प्रेम को तिलाञ्जलि दे देशसेवा की हो, किन्तु ऐसी सैकड़ों माताएं थीं, जिन्होंने अपने प्यारे बच्चोंको त्याग कर देशके बच्चों की रक्षा करनेके लिये अपना जीवन दे दिया था।"

कार्य-क्षेत्र।

अब केथोराइन अपने कर्तव्य पथ पर दृढ़ हो, कार्य-क्षेत्र में उतर पड़ी। उसे न तो घरवालों का प्रेम था न किसी कुटुम्बी का मोह। अब तो उसका एक ही कार्य था—किसानों के दुःख को दूर करना तथा उनको ज़ारके अत्याचारों से मुक्त करना। इस कार्य को पूरा करने के लिये उसने किसानों में ही रह कर किसानों की तरह जीवन निर्वाह करनेका निश्चय किया। ऐसा करने में उसकी सुन्दरता तथा शारीरिक कोमलताने बड़ी बाधा डाली, क्योंकि अमीर घरानेमें पले हुए स्त्री तथा पुरुषों के शरीर अत्यन्त कोमल होते हैं। अतः ऐसे नर नारियोंका छिपना बड़ा कठिन प्रतीत होता है। केथोराइन जब किसानों के साथ रह कर किसानोंकी तरह अपना जीवन व्यतीत करती थी, तो पुलिस की निगाह से न बच सकती। अतएव उसने अपना भेष छिपाने के लिये अपने मुंख तथा हाथ पैरोंपर तेजाब डाल लिया। जिस सुन्दरता को बनाने के लिये स्त्रियां तेल, पाउडर वेसलीन इत्यादि अनेकों चीजों में हजारों रुपया बरबाद किया

करती हैं, उसी सुन्दरता को नष्ट करनेके लिये कैथोराइन तेजाब लगाती है--कितना हृदय-विदारक दृश्य है! जब इतना बलिदान किया जाता है; उसी समय आत्माकी आवाज अपना असर पैदा कर संसार को हिला देती है।

अस्तु—तेजाब लगाने से कैथोराइन का रङ्ग काला पड़ गया और सूरत भी किसानों कीसी हो गई।

माशा केलेनकिन तथा याकोव स्टिफेनोविचको साथ लेकर सन् १८७४ ई० में कैथोराइन 'कम्यून' से बाहर निकल कर काम करने लगी।

माशा रङ्गाईका काम अच्छी तरह कर लेती थी और स्टिफेनोविच जूते का काम अच्छी जानती थी। 'कम्यून' से बाहर आने के समय ये तीनों किसानों की भांति मोटे कपड़े ही पहने हुए थे, उनकी पीठ पर कुछ मोटे कपड़े तथा कार्योपयोगी औजारों के झोले लदे हुए थे। इन तीनों के पास बनावटी पासपोर्ट भी थे।

ये तीनों 'डिनीपर' नदी के एक बन्दर के निकट पहुंचे। इस स्थान से चेरकस्स को नाव जाने वाली थी। जैसे तैसे कर ये लोग चेरकस्स पहुंचे—शाम हो चुकी थी। बड़ी कठिनता से एक अस्तबलमें जगह मिली, जहां पर इन लोगों ने रात भर विश्राम किया। उस अस्तबलमें इतनी दुर्गन्ध आती थी, कि माशा तथा कैथोराइन को नींद तक न आई। एक स्त्री ने दो जौ की रोटी लाकर कैथोराइन को दीं। अद्भुत मोटी-मोटी रोटियां थीं।

आज तक तो पतली पतली चपातियां दो दो तरकारी तथा मसालों के साथ खाईं थीं। आज ये मोटी सूखी रोटियां! किन्तु केथोराइन ने बड़ी कठिनता से पानी के घूंटों से रोटी निगल कर क्षुधा को शान्त किया।

जब प्रातःकाल हुआ तो माशाने नमूनेके तौर पर एक रूमाल रंगा, स्टिफेनोविच ने एक जूता बनाना आरम्भ किया तथा केथोराइनने भी जूतों पर पालिश करनेका काम शुरू कर दिया।

पूँछ तांछ करने पर मालूम हुआ, कि इस ग्राम के निवासी राज्य की भूमि पर कृषि करते थे, अतएव नये कानूनों का इन पर कुछ प्रभाव न पड़ा। ये लोग जार को पिता के समान मानते थे। सब लोगों का विश्वास था, कि जार को किसानों का कष्ट मालूम नहीं होता इसी कारण से कृषक दुखी रहते हैं।

केथोराइन ने देखा, कि इस ग्राम में उसका उद्देश्य सिद्ध न होगा, अतएव ये तीनों अपना कारोबार समेट कर स्माइलाको रवाना हुए।

स्माइला के अधिकांश लोग एक शक्कर के कारखाने में काम करते थे। बहुत से नरनारी झोंपड़ियां बनाकर उनमें निवास करते और बहुतसे पहाड़ियों में घर खोद कर निवास करते। केथोराइन तथा उसके साथियों ने एक मकान किराये पर लिया और वहीं रहने लगे। थोड़े ही दिनों में इन लोगों का एक युवक 'आइवान' से परिचय हो गया।

एक दिन आइवान ने पूछा,—"आप लोग अपना देश क्यों छोड़ आईं ?"

केथोराइन ने उत्तर दिया,—"नये कानून के मुताबिक हम से हमारी जमीनें छीन ली गईं और हम लोग निकाल दिये गये !"

ऐसा कहते हुए केथेराइनने गवर्नमेण्टके दोषोंका भी वर्णन किया तब आइवान कहने लगा—

"ज़ारको इसके बारेमें कुछ भी नहीं मालूम। यह अधिकारियोंका ही दोष है। ज़ार यह भलो प्रकार जानते हैं कि इसके राज्य-स्तम्भ किसान ही हैं, अतएव वे उन लोगोंको किसी प्रकारका भी कष्ट नहीं देना चाहते।"

केथोराइनने कहा, "ज़ार अमीरोंका ही सहायक है और अमीरोंकी भाँति अपना जीवन व्यतीत करता है। ज़ारको किसीके दुःखकी क्या खबर ?"

आइवान, बोला "यह कैसे सम्भव हो सकता है कि ज़ार अमीरोंकी सहायता करे, क्योंकि वह भली भाँति जानता है कि कि उसके राज्यमें किसानोंकी संख्या अधिक है और अमीर बहुत ही थोड़े हैं। इसके अतिरिक्त किसान कर देते हैं, अन्न उत्पन्न करते हैं और फौजी नौकरियां भी करते हैं।"

केथोराइनने कहा,"जो कुछ तुम कहते हो वह सत्य है। किन्तु विचार करनेसे मालूम हो जायगा कि जार किसानोंका शत्रु है। वह कभी भी किसानोंका हाल जाननेका यत्न नहीं करता। रात

दिन रईसोंके साथ ऐशो-आराममें ज़िन्दगी गुजारता है। जैसा कुछ अमीर लोग समझा देते हैं वैसा ही वह मान लेता है। यदि उसे किसानोंकी चिन्ता होती तो किसानोंकी भी सुनता और उनके दुःख मिटानेकी कोशिस करता।"

आइवान बोला, "जार किसानोंके प्रति बड़े दयालु हैं। किसानोंको वे अपने पुत्रके समान समझते हैं। जो कुछ त्रुटियां हैं वे रईसों तथा जमींदारोंकी शरारतका फल हैं।"

केथोराइनने पूछा, "तुम कहते हो—जार किसानोंका मित्र है। अच्छा! तो फौजें किसकी हैं? क्या वे जार की नहीं हैं?"

आइवानने उत्तर दिया, "हां वे उसीकी हैं।"

केथोराइन बोली, "जब फौजें जारकी हैं तब तुम्हारी सभाएँ क्यों भंग की जाती हैं और सभाएं न बन्द करने पर गोली क्यों चलाई जाती है?"

आइवान बड़बड़ाता हुआ कहने लगा, "वास्तवमें यह एक अद्भुत बात हैं, किन्तु सम्भव हो सकता हैं कि जारको गलत बातें समझाई जाती हों। आप यह भली भांति जानती हैं कि अधिकारिवर्ग महानीच हैं। ये लोग सदैव जहर ही उगलते रहते हैं। परमात्मा जारको दीर्घजीवी बनावे, उनका कोई दोष नहीं है।"

बड़ी देर तक वादविवाद होनेके पश्चात् आइवानको निश्चय हो गया कि किसानोंको लड़नेके लिये तैयार होना चाहिये, क्योंकि विना विरोध किये कुछ भी नहीं होता।

अइवानने पूछा, "क्या दूसरे स्थानोंमें भी लोगोंके यही विचार हैं ?"

केथोराइनने उत्तर दिया, "हां प्रत्येक स्थान पर ऐसे बहुतसे लोग मौजूद हैं, जो वास्तविक बातोंको समझकर अत्याचारियों का विरोध करनेके लिये उद्यत हैं।"

थोड़ी देर तक बात चीत करनेके पश्चात् आइवान बोलाः— "बहुत अच्छा ! मैं भी इन्हीं बातोंका प्रचार करूंगा। आप लोग भी जहां कहीं जावें, वहांके किसानोंको समझावें, सम्भव है वे लोग भी हमारी सहायता करें।"

केथोराइन ने कहा,—"तुम ऐसा क्यों विचार करते हो, कि ऐसे विचारवाली मैं ही एक हूं ? हजारों नर नारी सारे रूसमें इन बातोंको जान चुके है। और यथाशक्ति अत्याचारों का विरोध करते हैं। हमलोगों की शोचनीय दशा पर कई छोटी २ पुस्तिकायें लिखी जा चुकी हैं और बांटी जा रही हैं। उनमें की एक पुस्तिका मेरे पास भी है।"

केथोराइन ने एक पुस्तिका निकाली और आइवान को पढ़ कर सुनाई, जिससे उस पर बड़ा असर पड़ा। इस पुस्तिका में राजसत्ताओं के अत्याचारों का वर्णन किया हुआ था।

आइवान ने अपने साथियों से इन बातों का ज़िक्र किया। अतः रविवार के दिन आइवान के घर पर तीस चालीस नर-नारी एकत्रित हुए और केथोराइन से बात चीत की।

केथोराइन ने इन लोगों को उपदेश दिया और वही पुस्तिका

पढ़ कर सुनाई। पुस्तिकाके समाप्त होनेपर केथोराइनने पूछा,—"इतना बकनेका क्या फल हुआ? आप लोग क्या समझे? हमें क्या करना चाहिये?" इतना कहनेपर एक वृद्धने उत्तर दिया;—

"आप सत्य कहतो हैं। आपके शब्द बड़े मनोहर तथा भावपूर्ण हैं, किन्तु हम सब लोग विरोध कैसे करें? यदि हम अकेले ही शस्त्र लेकर गवर्नमेण्ट का विरोध करेंगे, तो सबके सब मार दिये जावेंगे। थोड़ीसी फौज से ही हमारा नाश हो सकता है, यदि और ग्राम भी सहायता करें तो सम्भव है, कि हमारे उद्देश्यों की पूर्त्ति हो जावे।"

एक दूसरा बोल उठा, "मेरे विचार में तो इन बातों को जार के कानों तक पहुंचाया जावे तो यह सबसे उत्तम होगा।"

केथोराइन ने उत्तर दिया, "तुम बड़ी भारी भूल करते हो, जार रईसों तथा जमींदारो से बढ़ कर अत्याचारी है और जार से सहायता पाना शैतान से मोक्ष मांगने के समान है।"

जार को शैतानकी उपमा देने से सब लोग बिगड़ गये, क्योंकि वे लोग जारको ईश्वर का प्रतिनिधि समझते थे, अतएव केथोराइन को वहां से चला आना पड़ा।

इस सभा की कुछ बातें वहां के अधिकारियों तक पहुंचीं, अतएव आइवान तथा उसके मित्रोंने केथोराइन, माशा आदि को वहां से चले जाने के लिये बाधित किया।

केथोराइन तथा उसके मित्रोंके चले जाने पर वहांके किसानों को बड़ा दुःख हुआ, यहां तक कि कई एक तो रोने लगे।

माशा कीव लौट गई। केथोराइन तथा स्टिफेनोविच ग्रामों में घूम घूम कर अपने विचारों का प्रचार करने लगे। नये कानूनों के कारण जो दशा किसानों तथा श्रमजीवियों की हो रही थी, उसका वर्णन करने पर किसानों पर बड़ा प्रभाव पड़ता था और वे लोग अत्यन्त दुखी हो प्राण तक दे देने को उद्यत हो जाते थे, किन्तु जब इन दुःखोंका कारण जार बतलाया जाता था, तो वे इस पर जरा भी विश्वास न करते और अधिकारियों को ही दोषी ठहराते। बहुत समझाने पर भी वे सब यही कहा करते थे कि जार बड़े न्यायी तथा पुण्यात्मा हैं। परमात्माकी ओर से वे हमारे राजा बनाये गये हैं, अतएव वे प्रजा को अपने पुत्र के समान समझते हैं।

गिरफ्तारी।

केथोराइन तथा स्टिफेनोविच प्रचार करते हुए जलापूल पहुंचे। यहांपर बहुतसा साहित्य प्राप्त हुआ, जिससे प्रचार-कार्यमें बड़ी सहायता मिली। सन् १८७४ ई० के प्रारम्भमें ही लगभग दो हजार शिक्षित नरनारी, इस दलकी दीक्षा ग्रहण कर ग्रामोंमें प्रचार करनेके लिये निकल खड़े हुए। बहुतों ने किसान बनकर ग्रामोंमें रहना प्रारम्भ कर दिया और बहुतसे श्रमजीवियोंमें मजदूर बनकर रहने लग गये। दिन भर तो वे उन्हीं लोगोंकी तरह श्रम किया करते और रातको जब सब लोग एकत्रित होते तो उन्हें शिक्षा देते और उपदेश दिया करते थे। पहले तो यह कार्य बड़ा कठिन तथा निराशापूर्ण प्रतीत

हुआ, किन्तु थोड़े दिनोंमें ही रूसके छव्वीस प्रान्तोंमें इन विचारों का पूरा प्रचार हो गया। केथोराइन तथा उसका साथी स्टिफेनोविच टलचिनमें प्रचार करते रहे और लोगोंको बहुतसी बातोंकी शिक्षा देते थे। उसी समय स्टिफेनोविचकी स्त्रीकी बीमारी की खबर आई अतएव वह कीव-चला गया।

एक दिन केथोराइन बाजारसे सौदा लेकर लौट रही थी कि एक गाड़ी उसके पीछेसे आई और उसके पास आते ही रुक गई। देखा तो उस गाड़ीमें पुलिस अफसर सवार था।

पुलिस अफसरने चिल्लाकर कहा, "खड़ी हो! तुम कौन और कहांसे आई हो?"

केथोराइनने कड़क कर उत्तर दिया, "आरलव प्रान्तसे"

पु० अ०, "तुम्हारा पासपोर्ट कहां है?"

के०, "मेरे मकान पर।"

वे सब शीघ्र ही केथोराइनके मकान पर जा पहुंचे। पास-पोर्ट देखनेके पश्चात उसके सामानकी तलाशी ली गयी। पुलिस-वाले उसके साहित्यको देखकर बड़े चकित हुए। तलाशी समाप्त हो जानेके बाद केथोराइन गिरफतार कर ली गयी और एक गुफामें कैद कर दी गयी।

इस गुफाका वर्णन करते हुए केथोराइनने लिखा है:— कि "जैसे ही गुफाके अन्दर गयी और आगेको कदम बढ़ाया कि मेरा पैर फिसल गया, क्योंकि फर्श पर काई जमी हुई थी। कुछ समय तक खड़े रहनेके पश्चात मेरा सर चक्कर खाने लगा और

में बेहोश हो जमीन पर गिर पड़ी। थोड़ी देरमें जब होश आया तो देखा कि सारे शरीर पर कीड़े रेंग रहे थे! गुफाकी दीवारें भी सीलके कारण भीगी हुई थीं। मैं रातभर गुफा में पड़ी रही। इसी स्थानसे साइबेरियाके भयानक कष्टों का आरम्भ होता है।"

फेथोराइनने अपने सहयोगियोंको सावधान करनेके लिये अपनी गिरफ्तारीकी खबर उन लोगोंके पास भेज दी।

फेथोराइन को बहुत दिनों तक पीट्रोग्राड की जेलमें विचाराधीन कैद रहना पड़ा। उसने लिखा है :—

"मेरी गुफा नौ फीट लम्बी, पांच फीट चौड़ी तथा सात फीट ऊंची थी। यह गुफा पहली गुफाकी अपेक्षा कुछ स्वच्छ थी। वायु आने जानेके लिये छतमें एक छोटासा छेद था। शयनार्थ मुझे एक कम्बल तथा एक घासका तकिया दिया गया था।"

"इस जेलके एकान्तवासमें हम सब एकसे विचार रखने वालोंने जो उसी जेलमें कैद थे एक सभा स्थापित की और एक दूसरे पर अपने विचार प्रकट करनेके लिये एक बड़ा अच्छा ढङ्ग निकाल लिया—।"

. "हमारी गुफाओंके नीचे ऊपर तथा आस पास और भी गुफाएं थीं, जिनमें मेरी ही तरहके अनेक कैदी रहते थे। और सब गुफाओंमें पाइपका प्रबन्ध था अतएव हम लोगोंने पाइप बजानेकी आवाजसे एक सांकेतिक भाषा बनाई। इसी भाषा द्वारा हम लोग आपसमें बातचीत किया करते थे।"

सन् १८७८ ई० में हम लोगोंका विचार प्रारम्भ हुआ। इस समय तक लगभग तीनसौ राजनीतिक अपराधी गिरफ्तार किये गये थे, जिनमेंसे एकसौ से अधिक कष्टोंके कारण मर गये। बाकी एकसौ तिरानवे एक हालमें खड़े किये गये, जिनमें से आधेसे ज्यादा हमारी जेल-सभाके सदस्य थे। मैंने देखा बहुतोंके चेहरे कष्टोंके कारण पीले पड़ चुके थे, किन्तु सब लोग पूर्ववत् अपने विचारों पर दृढ़ थे। मैंने सब लोगोंको समझाया कि विचारार्थ जूरीके सामने जाना केवल तमाशा मात्र है, क्योंकि जूरीके छः जज तो ज़ारकी ओरसे चुने गये थे और एक जज किसानोंकी ओरसे।

छः मास तक विचार होता रहा। जब मेरा समय आया तो मैंने जूरीके सामने जाने और अपने बयान देने से साफ इनकार कर दिया। मैंने जजों से कहा :— 'मैं समाज-सुधार तथा क्रान्तिकारी दलोंकी सदस्य हूं अतएव जारके न्यायको नहीं मानती।' इतना कहते ही मुझे जेलसे निकाल पांच वर्ष तक साइबेरियाकी खानोंमें कठिन परिश्रम करने का दण्ड दिया गया। जो दण्ड मुझे दिया गया वह अधिकतर हत्यारे और डाकुओंको दिया जाता है। रूसमें मैं ही सबसे पहली स्त्री थी जिसे राजद्रोह के अपराध में साइबेरिया की खानों में कठिन परिश्रमका दण्ड दिया गया था।

मैं अपने दस साथियों सहित 'ग्रेट साइबेरियन रोड' पर रवाना हुई। पांच हजार मील लम्बा सफर शुरू हुआ। हमारी

गाड़ियां दिन रात सफर करती थीं। कभी कभी सड़क के किनारों के कारागारों में विश्राम दिया जाता था। ये कारा-गार लकड़ी के लट्ठों के बने हुए थे, जिनकी कोठरियों की दीवारें सील तथा कीड़ों से भरी हुई थीं। बहुतसे लट्ठों पर हम लोगों से पहले जानेवाले कैदियों के नाम तथा मृत्यु-संवाद खुदे हुए थे। चारों ओर कैदी बच्चों की चिल्लाहट तथा रमणियों के रुदनकी आवाज सुन, हृदय फटा जाता था। हम लोग इस रुदनको देख अपने आंसुओं को न रोक सके और एक दूसरे से मिल कर खूब रोये।

क्रान्तिकारियोंकी दीनदशाका वर्णन करना मानव हृदय की शक्तिके बाहर है—उन लोगों को ऐसे ऐसे कष्ट दिये जाते हैं, जो इस संसार में पापीसे पापी और हत्यारे से हत्यारे को दिये जाते हैं। संसारका कोई भी ऐसा कष्ट नहीं है जो इन देश-प्रेमियोंको न दिया गया हो। इन्हीं कष्टोंके कारण हजारों कोमलहृदय तथा भले घरोंमें आरामसे पले हुए युवक तथा युवती अपने प्राण त्याग देते थे। अत्याचारोंका वर्णन कहां तक किया जावे—इन शिक्षित देशभक्तोंके मृत शरीर सड़कके किनारे फेंक दिये जाते थे!"

कारावास ।

जब कैथोराइन कारा की खानों में पहुंची, तो उसे मालूम हुआ कि जेल में आठ महीने का ही साल होता है और जितने दिन उसको विचारार्थ जेल में रहना पड़ा है, वह समय भी उस

के दण्ड की अवधि में सम्मिलित कर दिया जायगा। इसके अतिरिक्त राजनीतिक कैदियोंको अन्य कैदियोंकी भांति कठिन परिश्रम नहीं करना पड़ता। दस महीने बाद ही उसे कारागार से बरगजिन जाना पड़ा। इस यात्राका वर्णन करते हुए उसने लिखा है :—

"हमें अपने साथियों सहित पैदल ही चलना पड़ता था। बीमार बच्चे तथा स्त्रियां साथ की गाड़ियों में रखे गये थे। रास्तेमें हमें बहुतसे कैदियों की लाशें मिलीं। जिन्होंने भूख तथा यात्राके कष्टोंके कारण अपने प्राण त्याग दिये थे!

थोड़े दिनों बाद हम दूसरे विश्राम-स्थानमें पहुंचे। जेलके खुलने पर मालूम हुआ कि उस जेलमें सब स्त्रियां ही थीं। सब की सब उत्तम उत्तम वस्त्र तथा आभुषणोंसे सुसज्जित थीं।

हमारे आश्चर्य करने पर हमारे साथके सिपाहियोंने हँसकर कहा, 'थोड़े दिनोंमें ही इन युवतियोंकी बस्तियां बसकर मरु-भूमिको आबाद करेंगी, क्योंकि ये सन्तान उत्पन्न करनेके लिये ही इस स्थानपर कैद की गयी हैं'!"

संसार में रूस ही ऐसा देश है, जहांकी जेलोंसे युवतियां, अफसरों तथा सिपाहियोंकी कामेच्छा-पूर्त्ति के लिये साबेइरिया भेजी जाती हैं।

"इन स्त्रियों के श्रृंगार को देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, किन्तु रात्रीके समय शराबियोंके निरंकुश व्यवहार तथा अश्लील शब्दोंको सुनकर मैं अपने कमरेके द्वार पर आई। जो कुछ देखा

उससे बढ़कर दुश्चरित्रता—व्यभिचारका साक्षात् अवतार मेरे नेत्रोंको इस दृश्यके देखनेसे मना करने लगा। मैं कुछ भी निश्चय न कर सकी। मेरे विचारमें संसार का कोई भी सभ्य अपनी जातिकी इस दुर्दशा को अपनी आंखोंसे नहीं देख सकता। और न यह ही सम्भव हो सकता है कि वह इस पाप के दूर करने का यत्न न करे।"

बरगजनी पहुंचने पर केथोराइन को तीन ऐसे विद्यार्थी मिले, जिन्हें केवल संदेहमें ही निर्वासित कर दिया गया था। केथोराइन तथा इन तीनों विद्यार्थियों ने मिलकर भागनेका षड्यंत्र रचा। दो वर्ष तक तो ये लोग एक पथप्रदर्शक की तलाश में रहे। अन्त में एक वृद्ध को साथ ले भाग खड़े हुए। थोड़ी दूर जाने पर वृद्ध पैदल चलने में असमर्थ हुआ। वृद्ध का साथ छोड़ ये चारों आगे बढ़े। जैसे तैसे छसौ मील का सफर तै किया; किन्तु एपिल पहाड़ पर पहुंचते ही फिर गिरफ्तार कर लिये गये और तीनों विद्यार्थी अलग करके माकुरस्क भेज दिये गये। केथोराइन को भी चार वर्ष कठिन कारावास तथा चालीस कोड़े मारे जाने की आज्ञा दी गयी, किन्तु न जाने किस कारणसे कोड़े न मारे गये।

अबकी बार उसे कैदमें पहुंचने पर बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ, क्योंकि वहां बीस स्त्रियां भी राजनीतिक अपराध में दण्डित होकर भेजी जा चुकी थीं।

थोड़े दिनों बाद ही आठ कैदी भागे। अतएव अन्य राज-

गई। अतएव थोड़े ही दिनोंमें वह पूर्णतया स्वस्थ हो गई। उसके निर्वासन-काल के चार वर्ष इधर उधर घूम फिर कर देशोद्धार का प्रचार करनेमें व्यतीत हुए। इस समय में उसने कितने ही युवकों को पक्का देशभक्त बना दिया।

प्रचारके अतिरिक्त उसके पास जो समय बचता उस समयमें सीने तथा कसीदा काढ़नेका काम करती थी और उससे जो कुछ आमदनी होती उससे गरीबों की सहायता करती।

उसके घूमने के पहलेसे ही रूस भर में देशोद्धार के विचारों का प्रचार हो गया था। दिन रात हजारों कैदी साइबेरिया भेजे जाते थे। केथेराइन बहुतोंसे मिली और बातचीत कर उसने भविष्य की कार्य प्रणालीका निर्णय किया। सन् १८९६ ई० के सितम्बर मासमें उसके निर्वासन कालकी अवधि समाप्त हो गई, अतएव वह स्वदेश भेजदी गई।

फिर कार्यारम्भ

जब केथोराइन रूस पहुंची, तो वह तीन मास तक इधर उधर घूम घूम कर अपने सम्बन्धी तथा मित्रोंसे मिलती और उन्हें तलाश करती रही। जब वह अपनी बहन से मिली तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि आयुमें छोटी होते हुए भी वह देखने से अधिक वृद्ध मालूम होती थी। केथोराइनको निश्चय हो गया कि आराम पाने से बुढ़ापा जल्द आता है।

केथोराइनके पुत्र निकोलसका पालन पोषण तो भली प्रकार किया गया था, किन्तु उसके सम्बन्धियों ने उसे पक्का राजभक्त

बना दिया था, जिसके कारण वह अपनी मातासे कुछ भी सहानुभूति न रखता था। जब केथोराइन उससे मिली तो निश्चय हो गया कि क्रान्ति होनेके समय तक वह उसके किसी भी काम का नहीं और यदि उससे सम्बन्ध रखकर पत्रव्यवहार किया गया, तो वह बड़े सङ्कट में पड़ जायगी।

सब सम्बन्धियोंसे मिल चुकने के पश्चात् केथोराइन ने फिर अपना कार्य आरम्भ कर दिया। उस समय केथोराइन नितान्त अकेली ही थी क्योंकि पुराने मित्रोंका कोई पता न था। केथोराइन ने बड़े धैर्य के साथ काम करना आरम्भ किया।

अब किसान पहले की अपेक्षा बहुत कुछ समझने लग गये थे, अतएव प्रचार-कार्य में बड़ी सुविधा हो गई और वह ग्राम ग्राम घूम घूम कर प्रचार करने लगी।

कुछ समय तक तो वह अपने असली नाम से खुले तौर पर प्रचार करती रही, किन्तु उसपर सन्देह किया जाने लगा, अतएव उसने किसानों कासा वेप बनाया और किसानों केसे कपड़े पहन, नाम बदल कर प्रचार करने लगी, जिससे वह कई वर्ष तक कार्य करने में समर्थ हुई।

रूस गवर्नमेण्ट ने उसके गिरफ्तार करने के लिये अनेकों यत्न किये —पुलिस ने भी अपनी सारी ताकत खर्च कर डाली, किन्तु कोई फल न हुआ। वह पुलिस की आंखों में धूल झोंक कर उनके सामने ही काम करती रही और, उसे कोई भी पकड़ न सका।

उसी समय उसे और भी कई साथी मिल गये जिनके साथ उसने मिलों तथा कारखानों के मजदूरों में खूब प्रचार किया और कई एक सभाएं स्थापित कीं, इन सभाओं के हजारों मेम्बर घन गये थे। गवर्नमेण्ट के अन्यायोंकी कहानियां छापी जातीं और इन सभाओंमें बांट दी जाती थीं।

सन् १६०१ ई० में एक लीग स्थापित हुई। इस लीगके सव सदस्य देशभक्त ही थे। इस दल के सदस्यों का यही काम था कि ये लोग गवर्नमेण्ट के अधिकारियों तथा अन्य व्यक्तियोंको जो देशभक्तोंके खिलाफ कोई काम करते थे, मार देते, जिससे दूसरे लोग भयभीत होकर उनके विरुद्ध कोई काम न कर सकें। केथोराइन इस दलसे सहानुभूति रखती थी।

यद्यपि उस समय देशभक्तों के दबानेके लिये वड़े वड़े अत्याचार किये जाते, किन्तु उन लोगों की संख्या दिन पर दिन वढ़ती ही चली जाती थी। उन लोगों के सम्बन्धमें वड़े वड़े अन्याय किये जाते थे और विना विचार किये हुए ही साइवे-रिया भेज दिये जाते थे।

सन् १६०३ में वहुतसे देशभक्तों की तलाशी ली गयी और वहुतसे नेता कैद कर लिये गये। अनेकों छापेखाने तथा वहुतसा ऐसा साहित्य भी गवर्नमेण्ट के हाथ में आ गया। इन सारी वातों से इस कार्य को वड़ा भारी धक्का पहुंचा, किन्तु अन्य देशोंमें स्थापित की हुई समितियों ने वड़ी सहायता की जिसके कारण शीघ्र ही सब कमी पूरी हो गयी।

इसी वर्ष मई मासमें केथोराइन उडेसा पहुंची और जहाज पर सवार हो रुमानिया, हँगरी तथा वाइना से जनेवा, स्वीट-जर लैण्ड तथा पेरिस होती हुई लण्डन पहुंची। लण्डन पहुंच कर वह वहां के रूसी देशभक्तों से मिली। उसी समय लण्डन से अनेकों युवक तथा युवतियां हजारों पुस्तकें तथा अन्य वस्तुएं लेकर रूस जा पहुंचे और खूब प्रचार किया। लण्डन से आदमी तथा अन्य वस्तुओं को भेजने के कार्य में केथोराइन ने दो वर्ष व्यतीत किये। सन् १९०४ ई० के अन्त में वह संयुक्तराज्य अमेरिका जा पहुंची।

अमेरिका में भ्रमण।

अमेरिका पहुंचने पर केथोराइन का बड़ा स्वागत हुआ। उसने न्यूयार्क, बोष्टन, फिलाडिलफिया, शिकागो तथा अन्य कितने ही प्रसिद्ध स्थानोंकी बड़ी बड़ी सभाओं में व्याख्यान दिये, जिनमें रूसकी दीनदशाका दिग्दर्शन कराते हुए सहायता के लिये अपीलें कीं। अमेरिका निवासियों ने बड़ी सहानुभूति प्रकट की और यथाशक्ति सहायता भी दी।

केथोराइन को पूरा विश्वास था कि अति शीघ्र रूसमें एक बड़ी भारी राज्यक्रान्ति होगी। इसी विश्वास पर सन् १९०५ ई० में ही उसने अमेरिका निवासियोंको विश्वास दिलाया था कि रूस में क्रान्ति के भाव पूर्णतया फैल चुके हैं—४००,००० नर-नारी दिन रात क्रांतिकारी सिद्धान्तों का प्रचार करनेमें लगे रहते हैं और इन लोगोंका ध्येय स्वतन्त्रता प्राप्त करना ही है,

स्वतन्त्रताके अतिरिक्त वे संसार की किसी भी बात की चिन्ता नहीं करते।

उसने अमेरिका से विदा होते समय कहा था—"अमेरिका-निवासियों ने मेरे साथ बड़ी सहानुभूति दिखाई, किन्तु मैं यहां पर अधिक नहीं ठहर सकती। मैं शीघ्र ही फिर आऊँगी और बहुत सम्भव है कि पांच वर्ष बाद, जब रूस स्वतन्त्र हो जाये।" वह अमेरिकासे देशभक्तोंकी सहायतार्थ बहुतसा धन लाई।

केथोराइन के रूसी-राज्यक्रान्ति के दृढ़ विश्वास की पूर्त्ति सन् १६०५ ई० में ही दिखलायी देने लगी थी, क्योंकि चारों ओर पहले कानून सुधारने तथा बुरे कानूनों को तोड़ने के लिये हड़तालें आरम्भ हो गईं थीं। जिनके कारण ज़ारको विवश हो डूमा (राज्य नियमादि बनानेवाली सभा) प्रेस, भाषण की स्वतन्त्रता तथा अन्य कानूनों में तबदीलियां करने का वादा करना पड़ा।

पुनः गिरफ्तारी।

थोड़े दिनों तक तो वादे के मुताबिक काम हुआ और जनता भी कुछ शांत रही, क्योंकि प्रेस तथा भाषण की स्वतन्त्रता द्वारा पूरा काम हो रहा था—किन्तु यह स्वतन्त्रता रही थोड़े ही दिनों तक। प्रेस तथा भाषणकी स्वतन्त्रता छीन ली गई। देशभक्त तथा विद्वानों से जेलें भरी जाने लगीं और साइबेरिया की सड़कें निर्वासितों की आहों से गूंज उठीं! नतीजा यह हुआ कि रूसभरमें क्रान्तिके बादल उमड़ पड़े।

सन् १६०८ ई० में केथोराइन तथा अन्य कई प्रसिद्ध नेता गिरफ्तार कर लिये गये और सेण्टपीटर्सवर्ग तथा सेण्टपाल के किलों में बन्द कर दिये गये। बहुत दिनों तक हवालात में रहने के पश्चात् जब विचार आरम्भ हुआ, तब केथोराइनकी आयु ६८ वर्ष की थी। दो दिन तक विचार होता रहा। जब केथोराइन से उसका पेशा पूँछा गया तो उसने कहा "मेरा पेशा है समाज-सुधारों के विचारों का प्रचार।"

केथोराइन को निर्वासन-दण्ड की आज्ञा दी गई। दण्डाज्ञा को सुन वह बड़ी प्रसन्न हुई।

निर्वासन काल व्यतीत करने के लिये वह पीट्रोग्राड से कई हजार मील दूर केरन्सक नामक ग्रामको भेजी गयी। उसके मित्रों ने रास्ते के आराम के लिये बहुतसी सामग्री देनी चाही, किन्तु उसने कोई वस्तु भी अपने साथ न ली क्योंकि वह अपने सहवासियों के साथ रह कर समानजीवन व्यतीत करना चाहती थी। जबतक सब निर्वासित एकत्रित न हो गये, तब तक वह भी कैद रखी गयी। अन्त में एक सौ पचास राज-नीतिक तथा पचास साधारण कैदियों के साथ साइबेरिया-यात्रा प्रारम्भ हुई। प्रथम तो ये सब अपराधी इरकुटस्क तक रेल पर सवार कराये गये और दो दिनतक पैदल लगभग पचीस मील प्रति दिन के हिसाब से और फिर गाड़ियों पर सवार कराये गये। सब कुल अस्सी गाड़ियां थीं, उन गाड़ियों में हांकनेवाले के अतिरिक्त तीन २ कैदी बैठाये गये थे। रास्ते

भर केथोराइन प्रसन्नतापूर्वक सब को हँसाती हुई समय व्यतीत करती रही। उसके मुखपर मलिनता का नाम भी न था। इरकुटस्क पहुंचने पर सब निर्वासितों ने उसका बड़ा स्वागत किया। वहांसे किरंसक को रवाना हुई और २७ अगस्त सन् १९१० को वहां जा पहुंची।

निर्वासन-काल।

साइबेरिया पहुंचनेके थोड़े दिनों बाद ही केथोराइनको पत्र लिखने की आज्ञा मिल गई। उसने अमेरिकन स्वीस तथा रूसी मित्रोंको पत्र लिखे। उसने एक पत्रमें लिखा था;—"मुझ पर इस अवस्था में भी इतना संदेह किया जाता है कि मेरे चारों ओर जासूस लगे रहते हैं। जब मैं बाहर जाती हूं तो जासूस पीछा करते हैं।

कई युवकों को तो केथोराइन के पास जानेके अपराध में ही निर्वासित कर दिया गया था। एक दिन की घटना है— किसी की लाश दफनाई जा रही थी कि पुलिस ने चारों ओरसे कबरिस्तान को घेर लिया। जो कोई भी वहां मौजूद था सबके नाम लिख लिये गये और दो युवक गिरफतार कर जेल भेज दिये गये। इन सारी बातोंका कोई भी कारण न मालूम हुआ। पुलिस के इन कार्यों से लोग बहुत भयभीत होने लगे, अतएव केथोराइन ने सभासोसाइटियोंमें जाना बंद कर दिया, क्योंकि केवल इसीके कारण दूसरे निर्पराध लोग सताये जाते थे।

इन दिनों केथोराइन की अवस्था बड़ी विचित्र हो गई थी, क्योंकि नवयुवकों को नंगे पैर सर्दी में कठिन कार्य करते हुए

देखकर उसे बड़ा दुःख होता—वह विचारा करती थी कि इनके माता पिताने किस प्रेम तथा कष्टोंसे इन्हें पाला है। आज ये उन माता पिताओंसे हजारों मील दूर कष्ट उठा रहे हैं। इन हृदयके टुकड़ों की इस दशा को देख कौनसा कठोरहृदय माता पिता होगा, जिसका हृदय टुकड़े २ न हो जाय? जिस अत्याचारी सरकारने इन कोमल तथा होनहार बच्चों को ये कष्ट दिये हैं, वह सरकार कभी भी संसार में अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकती। इन बच्चों की आहों से संसार गूंजेगा और पापी सरकार का नाश होगा। परमात्मा शीघ्र सरकार को वह बुद्धि देगा;जिससे वह दिन दूने और रात चौगुने अत्याचार करे—तल-वार चलाये, बंदूक और तोप चलाये, देश-प्रेम तथा स्वाधीनताके नाम लेनेवालों को फांसी दे दी जावे! जब ऐसे २ काण्डोंकी रचना होगी, तभी स्वतन्त्रता देवी प्रसन्न होगी और अपने भक्तों की टेर सुन दर्शन देगी। इन विचारोंके साथ २ जब वह युवकों के दुःखको देखती तो उसका हृदय भर आता और उसका मातृ-प्रेम उमड़ पड़ता। अतएव उससे जहां तक सम्भव हो सकता, उन्हें सहायता पहुंचाने का प्रयत्न करती। मित्रों द्वारा भेजा हुआ धन, तथा अन्य सामग्री उन्हीं को बांट देती। अपने लिये अत्यन्त आवश्यकीय सामान के अतिरिक्त कुछ भी न रखती।

अमेरिका तथा रूससे उसके पास रुपया, पुस्तकें, कपड़े तथा अन्य वस्तुवें आया करती थीं। कुछ गुप्तपत्र भी उस के पास पहुंच जाते थे। अन्त में मित्रों के अनुरोध करने पर क्रान्ति के

कार्य में योग देने के लिये उसने छिप कर भागने का निश्चय किया। वह जहां नित्य भोजन करने जाया करती थी, एक दिन वहां पर ही अपने कपड़े उतार कर एक युवकको पहना दिये और उसी युवकके कपड़े पहन घोड़े पर सवार हो इरकुटस्ककी ओर भागी। कुछ दिनों तक तो जासूसों को कुछ भी पता न लगा, किन्तु थोड़े दिनोंमें ही सब भेद खुल गया। सेण्टपीटर्सवर्ग, इरकुटस्क तथा अन्य प्रसिद्ध २ स्थानों को तार दिये गये। इरकुटस्क से आठ जमादार तथा पचास सिपाही रवाना हुए। केवल सात मील पर ही इन सब की एक युवक से भेंट हुई। यह युवक अन्य कोई नहीं स्वयं केथोराइन ही थी। वह गिरफ्तार कर ली गई और जेल भेज दी गई। गिरफ्तारी का समाचार पाते ही मित्रों को बड़ा दुःख हुआ, किन्तु केथोराइन ने जरा भी खेद प्रकट न किया और सब मित्रों को भी आनन्दपूर्वक कार्य करने का उपदेश दिया। इस घटना से केथोराइन पर विशेष दृष्टि रखी जाने लगी और उसकी सारी स्वतन्त्रता छीन-ली गई। उसे अङ्गरेजी में पत्र लिखने की इजाज़त न थी। क्यों कि वहां की पुलिस अङ्गरेज़ी न जानती थी।

इस समय केथोराइन बहुत वृद्ध हो गई थी, उस के दांत गिर चुके थे और आंखों से दिखाई भी बहुत कम देता था, किन्तु वह अपने आप को युवकोंसे भी अधिक कर्तव्यपरायण समझती थी। वह कभी भी खाली न वैठती और इस अवस्था में भी कपड़ों पर वेलें काढ़ा करती थी।

मार्च सन् १९१५ ई० में केथोराइनकी आयु बहत्तर वर्ष की हो चुकी थी। वह कहती थी कि सत्तरवें वर्षसे मेरा नवीन जन्म आरम्भ हुआ है और इस जीवनके दो वर्ष बीत चुके हैं।

२५ मई सन् १९१५ ई० के एकपत्र में उसने अपने एक मित्रको लिखा था:—"योरोपीय महायुद्ध शीघ्र ही मित्रों की जीतके साथ समाप्त हो, क्योंकि मुझे आशा है कि इससे सारे संसार में शान्ति का राज्य होगा और अन्याय का दमन किया जावेगा।"

जूनमें वह इरकुटस्कसे याकुटस्क गई। इस यात्रामें उसको भेंट एक बड़े भारी राजनीतिक अपराधीसे हुई। वह लिखता है—

"केथोराइन कुछ २ बहरी होचली है उसके बाल बर्फके समान सफेद हो गये हैं, किन्तु उसके भाव तथा आत्मा पहले कैसे ही हैं। उसे देख कर मैं अपने आपको न संभाल सका और उस की छाती पर शिर रख कर बच्चे की भांति सिसक २ कर रोने लगा। 'ऊपर देख क्या बात है?' उसने कहा। 'मैं अपने बच्चों को मलिन नहीं देखना चाहती, प्रसन्न हो!' एक युद्धनायक की भांति कड़क कर बोली—'मैं जरा ऊंचा सुनती हूं।' मैंने देखा मातृवत् ,माता के नेत्र अश्रुपूर्ण थे, किन्तु मुख पर मुसकराहट थी। मैं कुछ भी न कह सका।"

थोड़े दिनों बाद मालूम हुआ कि वह याकुटस्क से भी दूर बुलन को भेजी जायगी। यह सम्वाद प्रकाशित होते ही अमेरिका में बड़ा विरोध हुआ और वहां वालों ने रूसी गवर्नमेंट को लिखा, तब वह फिर याकुटस्क में ही रहनेदी गई।

जनवरी सन् १९१६ ई० में वह बीमार हो गई और कुछ कमजोर भी हो गई। एक डाक्टर के परामर्श से उसने एक वृद्धा को किसी औषधि के लिये भेजनेको लिखा, इसके नामसे पुलिसवालों ने विस्फोटक (बम, बनानेकी चीजों) का अर्थ निकाला और उस वृद्धा को दो साल कठिन कारावास का दण्ड दिया गया! केथोराइन के चारों ओर पुलिसवाले दिन रात चक्कर लगाया करते थे और जो कोई उससे मिलने आता था उसे बहुत हैरान करते थे।

केथोराइन का विश्वास था कि योरोपीय-महायुद्ध के साथ ही साथ रूस का नवीन युग प्रारम्भ हो जायगा।

जब रूस में राज्यक्रान्ति का जन्म हुआ, तो केथोराइन को हार्दिक प्रसन्नता हुई। उसने कहा था:—"यदि अब मैं मर भी जाऊं तो शान्ति के साथ मरूंगी।"

अन्तमें जारपर क्रान्तिकारियों की विजय हुई। ज़ार रूस की गद्दीसे उतारा गया। रूसमें प्रजातन्त्र स्थापित हुआ औरस्वतन्त्रता की घोषणा की गई। उस समय केथोराइन मिन्युसनिस्क में थी। रूस भर में चारों ओर आनन्दोत्सव मनाये जाने लगे।

स्वतन्त्रता का युग।

रूसी प्रजातन्त्र ने सब से प्रथम राजनीतिक अपराधियों की स्वतन्त्रता की घोषणा की। उस समय केवल साइबेरिया में ही एक लाखके लगभग राजनीतिक अपराधी थे। सब उसी समय रूस भेजे गये।

रूस की नयी सरकार ने मेडम ब्रशकोवेस्की (केथोराइन) को स्वदेश लौटने के लिये एक विशेष निमन्त्रणपत्र भेजा। यह यात्रा केथोराइन के लिये बड़ी अद्भुत यात्रा थी। मास्को पहुंचते ही रूसी फौजें केथोराइन को जार के सिंहासन पर बिठला कर बड़े आदर के साथ फौजी ढङ्ग से डूमा हाल को लायीं। वहां पहुंचने पर बड़ी बड़ी वक्तृता तथा जय-ध्वनिके साथ उसका (Official Resoption) स्वागत किया गया।

इन सब के उत्तर में केथोराइन ने कहा—"देशबन्धुओ! इस समय देश भर के लिये शिक्षा तथा उच्चसाहित्य की बड़ी भारी आवश्यकता है, क्योंकि अभी जनता ने अपना कर्त्तव्य नहीं समझा है और अभी देश में ही बहुतसी ऐसी विरोधी शक्तियां विद्यमान हैं, जिन से पूरी तरह सामना करना है।"

सारे पिट्रोग्राड के लोग केथोराइनसे मिलनेके लिये जमा हो गये। जनता उसे देखने के लिये इतनी उत्साहित हो रही थी कि बहुतसे लोग रेलवे स्टेशन तोड़े डालते थे। बड़ी कठिनता से स्टेशन की रक्षा की गई। स्टेशन का शाही कमरा स्वागत के लिये ठीक समझा गया। उस समय सारा स्टेशन फूल तथा मालाओं से भर गया था।

गार्डों ने सबको स्वागतमें सम्मिलित होनेकी सुविधा पानेकी प्रतिज्ञा कर बड़ी कठिनतासे जनताकी उमङ्गको रोका।

न्याय-मन्त्री करेन्सकी के कन्धेपर हाथ रखे हुए वृद्ध दादी [केथोराइन] रेलगाड़ी के द्वार पर आई। करेन्सकी ने वृद्धा

की टोपी हाथ में लेकर कहा; "भाइयो ! रूसी राज्यक्रान्ति की दादी, अपने जीवन में ही स्वतन्त्र रूस में वापस आ गयी। इन्होंने साइबेरिया की काल कोठरियोंमें बड़े कष्ट भोगे हैं, किन्तु फिर भी हमारा सौभाग्य है कि हमने पुनः देशकी दादीके दर्शन किये। हमारी प्यारी दादी की जय हो!"

सब के उत्तर में केथोराइन ने कहा :—

"स्वदेश वासियो ! मैं पचास वर्ष तक क्रान्तिकारी दल की सदस्य रही हूं, किन्तु हम लोगों में कभी भी किसी प्रकार का कोई झगड़ा नहीं हुआ। मैं अपने सहयोगियों की सम्मति तथा सभी नियमों का भली भांति पालन करती रही।

"क्या तुम सब एक ही माता रूस के बच्चे नहीं हो ? क्या एक सिपाही तथा एक मजदूर बराबर नहीं हैं ? तब आपस में झगड़ा किस बात का ?

"जब हम सब स्वतन्त्रता तथा समानता के उपासक हैं, तब हम में भेद किस बात का ? झगड़ा किस बात का ? चलती हुई गाड़ी के पहिये में रोड़ा क्यों अटकाते हो ! यदि हममें से आपस का भेदभाव दूर हो जावे तो समझो हमने सब कुछ प्राप्त कर लिया।

"यह सब सम्मान एक ही व्यक्ति के लिये—जिसे तुम अपनी दादी कहते हो सिद्ध करता है कि तुम सब एक हो। सब कहते हैं कि 'स्वतन्त्रता के लिये प्राण दे देंगे' यह तुम्हारी वीरता है। मैं भली भांति जानती हूं कि तुम सब भेद-भाव

रूपी महान्-शत्रु का भली भाँति समाना कर उसे इस दे निकाल वाहर करोगे, जिससे देश में कलह तथा अशान्ति का युग न आने पावे।

" विना कठिन परिश्रम किये पूर्ण स्वतन्त्रता कभी भी प्राप्त न होगी। तीन वर्ष से रूस आपत्ति में फंसा हुआ था। परमात्मा ने कृपा की कि हमारे दुःख दूर हुए। अब हमें भेदभाव दूर कर चिरस्थायी सुखका आनन्द प्राप्त करना चाहिये।"

बड़ी जोरकी जय-ध्वनिके साथ केथोराइन एक कुर्सीपर बैठ गई और उस कुर्सीको करेंन्सकी, चेज तथा अन्य कई नेताओंने अपने कन्धों पर रख लिया और फेटरिन्सकहालको ले गये। वहां पर बड़े उत्साह तथा जय-ध्वनिके साथ स्वागत किया गया।

नेजरोन कोसक नामी डूमा के प्रधान-मेम्बर ने डूमा की ओर से उसका सम्मान करते हुए कहा, " रूस की दादी दीर्घायु हो! तुमने स्वतन्त्रता के बीज को अपनी युवावस्था में बोया और अपनी वृद्धावस्था में रूस को स्वतन्त्र बना सबको सुखी कर फल पाया। हे शान्ति दायनी दादा, दीर्घायु हो! रूसी देवी!! स्वतन्त्रता की मूर्त्ति, दीर्घायु हो!!!"

केथोराइन के पास रूस के प्रत्येक शहर से निमन्त्रण आये। निमन्त्रण पूर्त्ति के लिये केथोराइन को रेल में वास करना पड़ा। उसे चारों ओर लोगों को दर्शन देने तथा उपदेश देने के लिये देशभर में भ्रमण करना पड़ा। वह जहां भी जाती, 'एकता' का उपदेश करती।

की टोर्ट——————————————————————
दादी, थोड़े दिनों बाद ही उसने एक छापाखाना तैयार कराया, जिसके द्वारा साहित्य का बड़ा प्रचार हुआ। कुछ नवयुवक नियत किये गये और इन्हीं युवकों द्वारा देशभर में साहित्यका बड़ा अच्छा प्रचार हुआ। जनता अपना कर्त्तव्य समझने लगी, भेद भाव दूर हुए।

२१ सितम्बर सन् १९१७ई० को एक समाचार द्वारा विदित हुआ कि केथोराइन पीट्रोग्राड के शीत-प्रासाद (Winter-Palace) में निवास करती है। उसके हाथ में इस समय १४० छापेखाने हैं। जिस द्वारा किसानों तथा मजदूरों में प्रचार कार्य भली भांति किया जाता है।

मेडम ब्रशकोवेस्की रूसी पार्लियामेण्टकी सदस्य चुनी गयी। पीछे समाचारपत्रों से ज्ञात हुआ है:—"केथोराइनने घोषित किया है कि जो कृषक जिस भूमि को जोतता तथा बोता है वह उसीकी है और वह उसीके अधिकार में रहनी चाहिये।" उसने रूस के अन्य नेताओं से इस घोषणा का विरोध करने का निषेध किया। यह घटना संसार के इतिहास में एक अद्भुत घटना है।

केथोराइन के सारे जीवन ने उसके उन शब्दों की पूर्ति कर दी, जो कि उसने एक बार एक अपने अमेरिकन मित्र को लिखे थे।

पुराने ग्राहकोंको सूचना।

हम अपनी पुस्तकोंके बढ़ते हुए कामको देखकर, कार्यालयको कलकत्ताके प्रधान बाज़ार, हेरिसन रोड पर उठा लाये। बाहरके प्रेसोंसे ठीक समय पर काम न होता था, इसलिये प्रेस भी घरका करना पड़ा। अब सब किताबें समय पर प्रकाशित हो सकेंगी।

एक खास बात!

हिन्दीमें छोटी पूंजी वालोंकी तो बात ही क्या है, बहुतसे बड़ी पूंजीवाले भी अपनी मति गतिसे कुछ काम न करके दूसरोंकी ही झूठन खाते हैं और बात बातमें नकल करते हैं, यह हिन्दी-साहित्यके लिये अत्यन्त हानिकारक है, परन्तु आप देखेंगे हमारी एक भी किताब किसीकी नकल न होगी। मौलिकता पर विशेष ध्यान रखा जाता है। संसारमें एक ऐसा राजनीतिक साहित्य भी मौजूद है, जहां बहुत से हिन्दी साहित्यसेवी पहुंचने की कोशिस हीनहीं करते। इधर बहुतसे प्रकाशक, अच्छे लेखकोंको भी बाजारी लेखकों की तरह ठगनेकी कोशिस करते हैं, फल यह होता है कि अच्छे विद्वान् और प्रतिभाशाली लेखक फिर उधर भूलकर भी नहीं देखते! हमारे यहां इस बातकी कोशिस की जाती है कि सभी किताबें विद्वान् और प्रतिभाशाली लेखकोंसे लिखवाई जांय। भले ही पांच रद्दी पुस्तकों की जगह एक ही पुस्तक प्रकाशित हो। इन ही सब बातोंपर ध्यान रखते हुए हमने विद्वान् लेखकोंसे जहां सम्बन्ध स्थापित किया है, वहां विदेशोंके पुस्तक-प्रकाशकों और मूल लेखकोंसे परिचय प्राप्त किया गया है। जर्मनी, अमेरिका, इङ्गलेण्ड, फ्रांस तथा रूसके कितने ही लेखकोंकी पुस्तकें प्रति मास मंगाकर देखी भाली जाती है और इस बातकी बराबर कोशिस की जाती है कि किसी भी तरहसे इस साहित्यको प्रकाशित किया जाय, जिसकी तरफ बहुतसे हमारे दूसरे प्रकाशक भाइयों की नजर ही नहीं पहुंचती।

राष्ट्रीय-ग्रन्थ-रत्नाकर-सीरीज़।

—:o:—

उपरोक्त नामकी सीरीज़ में जो पुस्तकें प्रकाशित हो हुई और होनेवाली हैं, उनका विज्ञापन प्रथम पृष्ठसे आरम्भ होता है, उसे पढ़िये। हमारी पुस्तकें सभी बड़े बड़े प्रसिद्ध लेखकों द्वारा लिखी गयी हैं और सभी सचित्र और बढ़िया कागजपर छपी और अपने ढङ्गकी निराली होती हैं। अगर आप चाहें तो ।) प्रवेश फी भेजकर स्थायी ग्राहक बन जांय। आपको सब किताबें पौने मूल्यमें मिला करेंगी। जो किताबें अबतक निकल चुकी हैं, उन्हें अगर आप खरीद चुके हों तो मत लें, परन्तु आगे प्रकाशित होनेवाली सभी किताबें पौने मूल्यमें लेनी होंगी।

प्रकाशित पुस्तकें—

पुस्तक	मूल्य
भारतीय देशभक्तोंकी कारावास कहानी	२॥)
राजनीतिक षड्यन्त्र	१)

प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें—

पुस्तक		मूल्य
सिपोही विद्रोह		४)
केथोराइन	लगभग	॥)
मेकस्विनी	„	१)
राष्ट्रीय गान	„	१)
स्वाधीनताकी वेदीपर साहित्यका बलिदान		१॥)
कुसुम-कङ्कण	„	१)

और जो पुस्तकें प्रकाशित होंगी, उनकी सूचना बराबर कार्ड द्वारा स्थायी ग्राहकोंको दी जाती रहेगी।

मैनेजर—राष्ट्रीय-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्य्यालय,

रत्नाकर प्रेस, १६३—१६४ हेरिसन रोड, कलकत्ता।

या

सन् सत्तावनका गदर!

६०० पृष्ठ—दो दर्जनसे अधिक चित्र, बढ़िया एण्टिक पेपर। | बढ़िया आवरण, मूल्य ४ स्थायी ग्राहकोंको ३] में।

लेखक हैं—

श्रीयुत बा० हरिहरनाथसिंह बी० ए० बी० एल०।
,, पं० हेमचन्द्र जोशी बी० ए०।
,, पं० ईश्वरीप्रसाद शर्म्मा।

आजसे ६० ७० वर्ष पहलेकी भीषण और भारत व्यापी भयंकर घटनाका हिन्दीमें एक भी इतिहास नहीं। सन् सत्तावनके गदरका नाम सुनते हैं, पर वह क्यों हुआ था, उसके कारण क्या थे, भारतके एक छोरसे दूसरे छोरतक एक ही समयमें विद्रोहकी आगकी चिनगारी बारूदमें लगकर देशभरमें कैसे विद्रोहकी आग जल उठी। भारतमें अंग्रेजोंका सौदागरोंके रूपमें पदार्पण, ईस्ट इण्डिया कम्पनीका ज़माना, लार्ड डलहौसीकी समस्त भारत और देशी राज्योंको हड़प करनेकी भयंकर नीति, पेशवाओंका अस्त, मुगल साम्राज्यका अन्त, बहादुरशाह बादशाहका अधःपतन, अयोध्याकी नवाबीका खात्मा, महाराज रणजीतसिंहकी मृत्यु, महारानी जिन्दांकी नजरबन्दी, दलीपसिंहका निर्वासन और पञ्जाब—हरण। डलहौसीकी रवानगी, केनिंगका आगमन, भारत रूपी प्रशान्त महासागरमें विद्रोहके तोफानके लक्षण, अंग्रेज अफसरोंकी किंकर्त्तव्यमूढ़ता, अन्तिम बाजीराव पेशवाके दत्तक पुत्र धूधूपन्त नानाजीकी पेन्शनका बन्द किया जाना, झांसीके राजाकी वसीयत रद, और उनके दत्तक पुत्र दामोदरराव और लक्ष्मीबाईका सर्वस्व हरण, धूधूपन्त नानाजी और तातियां टोपे तथा कुंवरसिंहकी स्वदेश और स्वधर्मकी रक्षाके लिये भीषण भीष्म प्रतिज्ञा! उपद्रवका आरम्भ, झांसीकी महारानी रणाङ्गणमें। कालपीमें विद्रोहका झण्डा, नाना साहेब, तांतियाटोपे और महारानी लक्ष्मीबाईका ग्वालियर पर धावा और अधिकार। जयाजी-

राव सिंधियाका आगराको प्लायन और अंग्रेजोंकी कुमुक लेकर ग्वालियर-पर चढ़ाई। इधर मेरठ, और देहली, कानपुर, बिठूर, लखनऊ, अम्बाला, आरा, बारकपुर, आदिमें प्रकाश्य रूपसे अंग्रेजोंके साथ घोर महायुद्ध! महाराणी वीराङ्गना लक्ष्मीबाईका ग्वालियरके रणक्षेत्रमें देहान्त! संगठन न होनेसे नेताओंका प्लायन, तांत्या टोपेका छिप कर अंग्रेजोंसे घोर संग्राम! अनेक अंग्रेज और अंग्रेज महिलाओं तथा बालकोंका हनन, बदलेमें अंग्रेजों द्वारा जहां तहां भारत वासियोंका कत्ल ए आम समस्त देशमें घोर दमन और मारकाट! विद्रोहका अन्त और उसपर अंग्रेजोंका पूरी तरह कब्जा।

उपरोक्त बातें पुस्तकके प्रसिद्ध विद्वान् लेखकोंने बड़ी खोज और परिश्रम से लिखी है। एक भी घटना नहीं छूटने पाई। किसी देशी भाषामें तो क्या अंग्रेजोंमें भी अबतक ऐसा अच्छा गदरका सचित्र कोई इतिहास नहीं निकला।

-----:o:-----

केथोराइन

या

स्वाधीनताकी देवी।

। लेखक—श्रीयुत रामप्रसाद ।

रूसको ज़ारशाहीके पञ्जेसे छुड़ानेवाली, रूसी-राज्यक्रान्तिकी दादी केथोराइन, रूसके एक बहुत बड़े उपाधिधारी, धनाढ्यकी लाड़ प्यारसे पाली हुई लड़की थी, वह बड़ी भारी धनराशि तथा बड़ी जमीन्दारी की मालिक थी, उसके पास महल, अटारियां, बगीचे, दासदासियां सभी कुछ था, वह चाहती तो बड़े अमीराना ठाठसे अपनी जिन्दगी बसर करती। उसके पास रूप था, जिसपर हजारों नवयुवक लट्टू होकर उसके पांवोंपर गिड़गड़ाते, परन्तु केथोराइन इस संसारकी स्त्री नहीं थी! उसने जब देखा कि धनी और मानी लोग अपनी इज्जतको बचानेके लिये जार और उसके कर्मचारियोंके कुकर्मोंका ही समर्थन कर रहे हैं, देशके गरीब और किसान कठोर शासनके कारण भूखों मर रहे और कष्ट-यन्त्रणायें सहन कर रहे हैं! यदि कोई देशभक्त जरा शिर

उठाना, तो साइबेरियाके वर्षोंसे कालेपानीमें आजन्म कैद कर दिया जाता। अबतक कितने देशभक्त युवक देशभक्तिके अपराधमें फांसीपर लटकाये गये! कितने जारकी जेलोंके अन्धकारमय कैदखानोंमें बरसोंसे पड़े सड़े? वैभवशालिनी केथोराइनका हृदय अब इन भयङ्कर काण्डोंको और अधिक न देख सका, उसके हृदयमें स्वाधीनताकी आग धधकने लगी! पहले उसने धन और वैभवसे पूर्ण अपना घर छोड़ा, मां, बाप, भाई, बहिन छोड़े और छोड़ा साथमें वीरतापूर्वक काम न कर सकनेवाला, अपना पति! उसका रूप उसके कार्यमें बाधा न पहुंचा सके, इसलिये तेजाब डालकर उसने अपने मुख और अन्यान्य अङ्गोंका सौन्दर्य नष्ट किया! देशके गांव गांवमें चक्कर लगाकर एक बहुत बड़ी क्रान्तिकी तैयारी करनेका मन्त्र लोगोंके कानोंमें फूंकना आरम्भ किया। इसके लिये उसे कितनी बार जेल और साइबेरियाकी हवा खानी पड़ी, इसका कुछ ठिकाना नहीं। अन्तमें वीरबाला केथोराइनकी विजय हुई, जारका पतन हुआ और देखते हैं केथोराइनकी कृपासे रूस, आज आजाद है! इसी स्वाधीनताकी देवी केथोराइनका यह सचित्र जीवन चरित है। उसके कामोंका सजीव भाषामें वर्णन किया गया है। आरम्भमें केथोरानका चित्र दिया गया है। मूल्य ॥) स्थायी ग्राहकोंको ।≈) में मिलेगी।

—:o:—

स्वाधीनताके सिद्धान्त।

(ले० वीर लार्ड मेयर मेकस्विनी)

भूमिकाकी लेखिका हैं—मिस मेकस्विनी।

कार्क के लार्ड मेयर मेकस्विनीने स्वाधीनताकेलिये ७४ दिन जेलमें भूख रहकर प्राण दे दिये! स्वाधीनताके लिये इस तरह संसार

के इतिहासमें इतने बड़े बलिदानका उदाहरण मिलना कठिन है। उन्होंने जो कुछ पढ़ा लिखा और प्रतिष्ठा प्राप्त की—सब स्वदेशके लिये! आयर्लैण्डके गांवोंमें घूमकर लोगोंको स्वाधीनताके युद्धके लिये तैयार किया। आज जो फ्रीस्टेटवालों और इर्रेगुलर सिन-फिनरोंमें घोर संग्राम होरहा है, यह लार्ड-मेयर मेकस्विनीके आत्म-बलिदानका ही फल है। यह पुस्तक उनकी ही लिखी हुई है और इसमें लिखा है कि स्वाधीनताके लिये किस तरह सर्वस्व त्याग करनेकी जरूरत हैं। साथमें ही उनके परम मित्र मि० होगार्थी द्वारा लिखा उनका जीवन चरित्र है। उनकी सहोदरा भगिनी मिस मेक-स्विनीसे इस सचित्र पुस्तककी भूमिका लिखाकर आयर्लैण्डसे मंगाई गई है, जो आरम्भमें दी गई है। पुस्तकमें वीर मेकस्विनीका चित्र भी दिया जायगा। मूल्य लगभग १) रु० होगा। स्थायी ग्राहकों को पौने मूल्यमें मिलेगी।

स्वाधीनताकी वेदी

पर
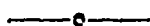
साहित्य का बलिदान।

(लेखक—श्रीपं० हेमचन्द्र जोशी बी० ए०)

हिन्दीके सुप्रसिद्ध लेखक जोशीजी ने यह पुस्तक कितनी ही फ्रेञ्च और रशियन भाषा की पुस्तकों के आधार पर लिखी है। इसमें रूस, फ्रान्स और अमेरिकाके उन प्रसिद्ध साहित्य-सेवियोंकी दर्दनाक सचित्र कहानियां हैं, जिन्होंने साहित्य-सेवा द्वारा देशको स्वाधीन बनानेका अदम्य उत्साहसे कार्यारम्भ किया था! किसको किस लेखके आधार पर आजन्म कैद हुई, तथा किसको किस कार्य के अपराध में कालेपानी की सजा मिली, कौन साहित्यसेवी स्वाधीनताके लिये लेख लिखने के कारण-

फांसी पर लटका दिया गया, समय पड़ने पर अपने देश की स्वाधीनता के लिये कहां २ के किन २ साहित्य सेवियों ने स्वाधीनताकी वेदी पर अपना बलिदान कर दिया! स्वाधीनता से प्रेम करने के अपराध में किन २ साहित्य सेवियों पर कहां की नौकरशाहियोंने कैसी अमानुषिकता के साथ कोड़े बरसाये? साहित्य-सेवियों के इस रोमाञ्चकारी-बलिदान को पढ़कर आप कांप उठेंगे! हिन्दीके राजनीतिक-साहित्य में यह एक अभूत-पूर्व पुस्तक होगी। १५ के लगभग चित्र होंगे। मूल्य होगा लगभग १॥) स्थायी ग्राहकों को पौने मूल्य में मिलेगी।

कुसुम-कङ्कण ।

(लेखक—श्रीयुत उमादत्त शर्म्मा)

इस पुस्तकमें १५ के लगभग सामाजिक और राजनीतिक रोमाञ्चकारी-कहानियां होंगी। ऐसी गल्पें आपने बहुत कम पढ़ी होंगी, जिनमें समाज का ऐसा चित्र स्वाभाविकताके साथ चित्रित किया गया हो। हमारे समाज में प्रचलित कई कुरीतियां कैसे हमारा सर्व्वनाश कर रहीं हैं, दरिद्र देशको रसातल को भेजनेके लिये कैसी २ भयङ्कर तैयारियां हो रही हैं, इनका वर्णन रोमाञ्च-कारी भाषामें पढ़ने को मिलेगा, इस पुस्तकको पढ़ते समय कहीं आप देश की दरिद्रता पर आंसू बहायेंगे, कहीं वीरताके साथ कर्त्तव्य निश्चित करनेका प्रण करेंगे, कहीं भक्तिभावसे द्रवित हो उठेंगे, कहीं समाज और देशकी असहायावस्था को देखकर हाथ मलने लगेंगे! बढ़िया सुन्दर छपाई। मुल्य १) के लगभग होगा। स्थायी ग्राहकों को पौने मूल्यमें मिलेगी।

राष्ट्रीय-गान ।

(सम्पादक—कविवर चक्रपाणि)

इस सुन्दर कागज पर छपी पुस्तकमें भारतके वर्त्तमान प्रसिद्ध राष्ट्रीय हिन्दी, उर्दू के कवियोंकी प्रसिद्ध कवितायें होंगी । हिन्दी के राजनीतिक कविता-साहित्य में अब तक ऐसी बढ़िया कोई किताब नहीं प्रकाशित हुई । किसी कविताको पढ़कर आपमें वीर भाव जोश मारने लगेगा, तो कहीं रोमाञ्च हो उठेगा, कहीं राष्ट्रीय झन्कारोंसे हृदय-तन्त्री बज उठेगी, कहीं अपूर्व बलिदान को देख कर आप चमक उठेंगे । मूल्य लगभग १) होगा । स्थायी ग्राहकों को पौने मूल्य में मिलेगी ।

--:०:--

राजनीतिक साहित्य ।

भारतीय देशभक्तों की कारावास कहानी	२॥)	राजनीतिक षड्यन्त्र	१)
		सिपाही विद्रोह	४)
केथो राइनः	॥)	लार्ड मेयर मेकस्विनीः	१)
स्वाधीनता को वेदी पर साहित्य का बलिदानः	१॥)	कुसुम-कङ्कणः	१)
		राष्ट्रीय गान	१)
महाराज नन्दकुमारको फांसी	२॥)	पञ्जाबका हत्याकाण्ड बढ़िया १॥)	
		पञ्जाब हरण	२)
रूसकी राज्यक्रान्ति	२॥)	चीन की राज्यक्रान्ति	१)
बोल्शेविक जादूगर लेनिन	॥)	बोल्शेविज्म	१।≈)
फौजीमें मेरे २१ वर्ष	॥)	फौजी में कुली प्रथा	१)

ःनोट—और जो पुस्तकें तयार हो रही हैं, उनकी सूचना स्थायी ग्राहकों बराबर मिलती रहेगी ।

नोट :—जिन पुस्तकों के सामने ः निशान हैं, वे अन्तिम दिसम्बर सन १९२२ तक छपकर तैयार हो जायेंगी ।

काशीका विद्रोह	।≈)	रूस का षड्यन्त्र	२)
गुलामी से उद्धार	१)	स्वराज्य संग्राम	॥)
देवी जोन	।≈)	रौलेट एक्ट	२)
स्वराज सिद्धान्त	१।)	सत्यनिबन्धावली	॥≈)
भारत और इङ्गलैण्ड	१॥)	भारत दर्शन	२)
आनन्द मठ	॥।)		

इतिहास ।

भारत वर्ष का इतिहास	३)	भारत के देशी राष्ट्र	॥।)
इटली की स्वाधीनता	॥)	इङ्गलैण्डका इहिास पूर्ण	४)
ग्रीस का इतिहास	१≈)	काशीका विद्रोह	।≈)
जापान का इतिहास	॥।)	दिल्ली का इतिहास	॥)
फ्रान्स की राज्यक्रान्ति	॥।≈)	रूस की राज्यक्रान्ति	२)
चीनकी राज्यक्रान्ति	१)	भारतीय सिपाही विद्रोह सचित्र	४)
रोम का इतिहास	१)		
हालैण्ड की स्वाधीनता	॥।-)	युनान का इतिहास	॥।)
सरविया का इतिहास	।-)	नेपाल का इतिहास	।)
जर्मनी का इतिहास	२)	स्पेनका इतितास	॥≈)

जीवन-चरित्र ।

श्रीकृष्ण चरित्र	४)	शिवाजी	।≈)
श्री अरविन्द चरित्र	१॥)	अब्राहम लिंकन	॥≈)
इटली के विधाता मेजनी	२॥)	केशव चन्द्र सेन	१≶)
	॥।)	जर्मनी के विधाता	।)
लोकमान्य तिलक	१॥)	देवीजोन	।≈)
नेपोलियन बोनापार्ट	२॥)	महाराज रणजीत सिंह	१।)
पृथ्वीराज	१॥)	प्रेसिडेण्ट विलसन	॥≈)
भीम चरित्र	॥≈)	महात्मा गांधी	१)

देशबन्धु दास	१)	लाला लाजपतराय	॥)
महात्मा गोखले	।≈)	मि० रानाडे	॥।)
रूस का राहू	।≈)	लक्ष्मीबाई	१।)
लार्ड किचनर	१)	बंकिमचन्द्र चटर जी	१≈)
सिकन्दर शाह	१॥≈)	महाराणा प्रताप	१॥≈)
बुद्धदेव	१)	गुरु गोविन्द सिंह	।≈)

बढ़िया उपन्यास।

कृष्णकान्त का विल	१॥)	रजनी	१≈)
कपाल कुण्डला	१।)	सीताराम	२।)
विषवृक्ष	१॥)	चन्द्रशेखर	२)
इन्दिरा	१।)	राजसिंह	२॥)
देवी चौधरानी	२)	मानसिंह	२)
लवङ्गलता	१॥)	शीलबाला	१)
अभागिनी	१।)	अभिमानिनी	२)
राधाकान्त	१।)	अनाथ बालक	१॥)
मंझली बहू	॥)	पाप परिणाम	१)
सेवा-सदन	२॥)	प्रेमाश्रम	३॥)
कुसुम-कङ्कण	१)	आख्यायिका सप्तक	॥≈)
अन्नपूर्णा का मंदिर	१)	आंख की किरकिरी	१॥≈)
कृपा	१)	कर्मपथ	१)
कुमारी	॥)	जारीना	॥)
टाम काका की कुटिया	॥)	बलिदान	१)
पटेल-भगिनी	१)	शान्ति कुटीर	॥≈)

स्त्रियोपयोगी सचित्र पुस्तकें।

आदर्श महिला (सचित्र)	२)	सुखी गृहस्थ	॥)
कुल लक्ष्मी „	१।)	स्त्री कर्त्तव्य	॥)

सीता	„	२॥)	गृहिणी भूषण	॥)
सती पार्वती	„	२)	देवी द्रौपदी	॥=)
सावित्री सत्यवान	„	१॥)	सावित्री गायत्री	॥)
नल दमयन्ती	„	१॥)	पार्वती और यशोदा	॥)
शकुन्तला	„	२)	स्त्रियों के रोग	१)
चिन्ता	„	१॥)	भारतीय विदुषी	॥)
द्रौपदी	„	३)	नारी रत्न माला	।≡)
शव्या	„	२)	सती पंचरत्न	१।)
सीता चरित्र	„	१॥)	स्त्रियोंका स्वर्ग	२)
मुसलिम-महिला रत्न		२।)	हरिश्चन्द्र शैव्या	२॥)
सती बेहुला		२।)	वीर पञ्चरत्न	३)

कविता पुस्तकें ।

किसान	।=)	भारत भारती	१)
जयद्रथ वध	॥)	रंग में भंग	।)
पत्रावली	।-)	विरहिणी व्रजांगना	।)
पलासी का युद्ध	१॥)	शकुन्तला	।=)
वैतालिका	।)	अनुरागरत्न (नाथूराम शङ्कर)	१)
मौर्यविजय	।)	कविता कौमुदी (वर्तमान कवियोंकी कविताओंका संग्रह	३)
राष्ट्रीय वीणा	॥)		
राष्ट्रतन्त्री झंकार	≡)	बूढ़े का व्याह	।=)
रसाल वन	।-)	भारत गीताञ्जलि	॥)
शङ्कर सरोज	॥)	स्फुट कविता	॥=)
हृदय तरंग(सत्यना० क०)	१)	त्रिशूल तरंग	॥)

हास्य कौतुक ।

चुङ्गीकी उम्मेदवारी	।)	शिवशम्भू के चिट्ठे	।)
बीरबल विनोद	१।)	समके घर धूम	।)

प्रायश्चित्त	।)	टॉक पीटकर वैद्यराज	।-)
भड़ामसिंह शर्म्मा	॥)	मूर्खमण्डली	॥≈)
भोज और कालीदास	१।)	डुप्लिकेट	।≈)
मर्दानी औरत	१)	गड़बड़ घोटाला	।)

विज्ञान।

कर्त्तव्य शास्त्र	१)	रंगकी पुस्तक	१)
ज्ञान और कर्म	३)	रोशनाईकी पुस्तक	॥)
गुरुदेव के साथ यात्रा	।≈)	विकाशवाद	२॥)
चुम्बक	।≈)	विश्व प्रपंच	१)
ज्योतिर्विनोद	१)	वारनिश पेन्ट	१)
ज्योतिष शास्त्र	॥)	व्यवहारिक विज्ञान	१।)
तेलकी पुस्तक	१)	विद्युत शास्त्र	३)
ताप	।-)	विज्ञान प्रवेशिका २ भाग	१।)
प्रकृति	१)	विज्ञान अद्वैत वाद	१॥)
भौतिक विज्ञान	१)	साबुन की पुस्तक	१)
मानसिक आकर्षण द्वारा व्यापारिक शिक्षा	।)	सुसरल मनोविज्ञान	१।)
		सरल रसायन	१)
रसायनशास्त्र	३॥)	वर्णकारी	१)

अर्थशास्त्र और व्यापार।

अर्थशास्त्र प्रो० बालकृष्ण	१॥)	अमेरीका व्यापार और उसका विकास	॥)
अर्थ शास्त्र मि० फासेट	१।)	विक्रय कला	॥)
अर्थशास्त्र प्रवेशिका	।)	पैसा	।≈)
आर्थिक सफलता	।≈)	भारतकी साम्पत्तिक अवस्था	३॥)
उद्योग शिक्षा	१)	वैदेशिक व्यापार	॥)
व्यापार शिक्षा	॥-)		

व्यापार तत्व	॥)	सम्पत्ति शास्त्र	२॥)
बैंक की १२ बातें	≡)		

भ्रमण।

अमेरीका पथ प्रदर्शक	।≤)	भारत भ्रमण	१०)
अमेरीका दिग्दर्शन	॥)	लंका यात्रा	॥)
अमेरीका भ्रमण	॥)	लन्दन और पेरिसकी सैर	॥≤)
अमेरीका कैलाश यात्रा	॥)	हिन्दू तीर्थ	॥)

विविध।

श्रीकृष्ण चरित्र ३२ चित्र	५॥)	महाभारत २८ चित्र	३)
श्रीराम चरित्र ३१ "	५॥)	गांधी गौरव २५ "	३)
भाव चित्रावली १०० रङ्गीन चित्र	२) ४)	महायुद्धका सचित्र इतिहास	१॥≤)
लोक रहस्य	१।)	सम्राट् अकबर	४॥)
भारतीय गोधन	२)	भारतीय दर्शन शास्त्र	१॥)

गांधी-ग्रन्थ-माला।

महात्मा गांधीके अनुमोदनसे।

असहयोग के अवतार वा महात्मा गांधी	≡)	सुदर्शन चक्र चरखा ले० म० गांधी	≡)
म० गांधीके अनमोल बोल	≤)	पराधीनता भू० ले० स्वा० स०	।≡)
भारतको तुरत स्वराज्यकी आवश्यकता ले० भारत-भक्त एण्ड्रूज	।≤)	दे० चितरंजनदासका जी० च०	≤)
		असहयोग और विद्यार्थी	≡)

भिन्न २ लेखकोंके जासूसी तिलिस्मी आदि विषयों के उपन्यास।

अमीरअली ठग	॥।)	चन्द्रकान्ता सन्तति २४ भा०	७॥)
अर्थमें अनर्थ	१॥=)	छः मामले	१।)
अद्भुत जासूस	१॥)	जासूसी कुत्ता	१॥)
कटा शिर	॥।)	जासूसी चक्कर	२)
कृष्णवसना सुन्दरी	१)	जासूसीगुलदस्ता	२)
कोहेनूर	१॥)	जासूसी पिटारा	॥)
किलेकी रानी	॥।)	जटिल जासूस	१॥)
कैदीकी करामात	१॥)	जर्मन षड्यंत्र	१॥)
खूनीका भेद	।)	जासूसकी बुद्धि	१)
खूनी कलाई	॥)	जय पराजय	॥)
खूनी औरत	१)	जासूसकी डाली	१।)
गाड़ीमें खून	१)	जासूसकी जवानी	१)
गुलाबमें कांटा	१।)	जासूसकी ऐयारी	।-)
गुलबदन	१।)	जासूसके घर खून	१।)
घटना घटा टोप	१॥)	जासूसी कहानियां	॥)
घटना चक्र	२।)	टिकेन्द्रजीत सिंह	॥।)
चालाक चोर	१)	ठन ठन जासूस	१॥)
चक्करदार खून	२)	डाक्टर साहब	१।)
चन्द्रकान्ता उपन्यास	१।)	डबल जासूस	१॥)
डबल खून	१)	महेन्द्रकुमार ५ भाग	४।)
पानका नाला	॥-)	मायावी	१॥)
पुतली महल	१॥=)	मयंक मोहिनी	॥)
पीतलकी मूर्त्ति ५ भाग	६।)	मृत्यु चिभिषिका	१॥)
तीन तहकीकात	१।)	रहस्य कुण्ड २ भाग	३।)